अनीति से जूझने वाले राष्ट्र को समर्पित शूरवीर

— श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

अनीति से जूझने वाले राष्ट्र को समर्पित शूरवीर

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लेखक :
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. : ०९९२७०८६२८९, ०९९२७०८६२८७

पुनरावृत्ति सन् २०१०

मूल्य : १२.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

लेखक :
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पुनरावृत्ति सन् २०१०

मुद्रक
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मातृभूमि के बलिदानी
सोहनलाल पाठक

फाँसी के फंदे पर लटकने से पहले जेल अधिकारी ने कैदी से पूछा–''आपकी अंतिम इच्छा क्या है?''

कैदी मुस्काया, उसने कहा–''मैं चाहता हूँ कि मुझे शीघ्र से शीघ्र फाँसी दी जाए ताकि मेरा यह जन्म समाप्त हो और दूसरा जन्म लेकर भारत को स्वतंत्र कराने के प्रयत्न में दूसरी बार फाँसी के फंदे को पुनः चूम सकूँ।''

यह कैदी कोई साधारण कैदी न था। किसी चोरी, डकैती या कत्ल करने के अपराध में जेल के सींखचों में बंद न किया गया था। वरन यह देशभक्त था और देश को स्वतंत्रता दिलाने का प्रयत्न ही इसका अपराध था। नाम था–सोहनलाल पाठक।

मांडले की जेल। १० फरवरी, १९१६ की एक सुबह। अमर शहीद सोहनलाल पाठक को फाँसी के तखते पर चढ़ाया। जल्लाद उस निरपराधी की जीवन लीला समाप्त होते देख आँसू बहा रहे थे और पाठक अपने देश पर न्योछावर होने में प्रसन्नता तथा गर्व का अनुभव कर रहे थे। भला जिस देश में ऐसे बहादुर हों, उस देश की स्वतंत्रता को रोक भी कौन सकता था?

सोहनलाल पाठक का जन्म सन् १८८३ में हुआ था। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण स्कूली शिक्षा से शीघ्र ही संबंध तोड़ना पड़ा और लाहौर के डी. ए. वी. स्कूल में केवल २१ रु. मासिक पर शिक्षक का कार्य करना पड़ा।

इस समय राजनीतिक क्षेत्र में ऐसी घटनाएँ घट रही थीं, जिनकी उपेक्षा करना पाठक जैसे देशभक्त के लिए संभव न था। बंगाल का विभाजन, लाला लाजपत राय और सरदार अजीत सिंह जैसे नेताओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की गिरफ्तारी, खुदीराम बोस का बलिदान और मदनलाल ढींगरा द्वारा कर्जन पर गोली चलाना जैसी घटनाएँ उनके कानों में पड़तीं और अँगरेजों द्वारा भारतीयों पर किए गए अत्याचार देखने और सुनने को मिलते तो उनका खून खौलने लगता था।

सन् १९०८ में लाला हरदयाल इंगलैंड से लौटकर लाहौर आए तो युवक पाठक का उनसे संपर्क बढ़ने लगा। इसी समय उन्हें एक पुत्र का पिता बनने का अवसर मिला। परिवार के लिए यह प्रसन्नता की ही बात थी, पर दूसरे ही क्षण यह समाचार भी सुनने को मिला कि पुत्र को जन्म देकर माँ सदैव के लिए संसार से विदा हो गई और एक सप्ताह बाद वह पुत्र भी भगवान का प्यारा हो गया।

पाठक की उस समय उम्र ही क्या थी। घर वाले तथा मित्रों ने दूसरे विवाह के लिए बहुत जोर दिया पर उन्होंने साफ-साफ कह दिया, ''ईश्वर मुझसे कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यों की आशा करता है इसलिए तो उसने उत्तरदायित्वों से मुक्त किया है।''

उनका लक्ष्य था दूसरे देशों से सहायता प्राप्त करके भारत में क्रांति करवाना और अँगरेजों को देश छोड़ने के लिए विवश करना। उस समय तक कांग्रेस पार्टी एवं गांधीजी पूर्ण प्रकाश में भी न आ पाए थे और उनकी गतिविधियाँ देश हित में तेज न हो पाई थीं। उस समय पाठक अपने छह साथियों को लेकर अमेरिका पहुँचे।

भारतीयों के सहयोग से अमेरिका में गदर पार्टी की स्थापना की गई और एक गदर पत्र निकाला गया जिसका उद्देश्य भारतीय स्वतंत्रता के लिए वातावरण का निर्माण करना था।

सन् १९१४ में विश्वयुद्ध छिड़ गया। अँगरेजों ने दो लाख सैनिकों को भारत से बाहर युद्ध के लिए भेजा। इस अवसर का क्रांतिकारी लाभ उठाना चाहते थे। सोहनलाल पाठक वर्मा में क्रांति कराने का प्रयास कर रहे थे। उन्होंने वहाँ के दो हजार सैनिकों को अपने पक्ष में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर लिया। चार दिन तक सिंगापुर में क्रांति की ज्वाला धधकती रही और वहाँ का शासन सूत्र देशभक्तों के हाथ में रहा।

एक दिन पाठक सैन्य छावनी में कुछ सैनिकों को मार्गदर्शन दे रहे थे कि तीन हिंदुस्तानी सैनिकों ने उनको घेर लिया। वह हिंदुस्तानी सैनिक उनके भाई थे। वह अपने देशवासियों से बदला नहीं लेना चाहते थे। वैसे उस समय उनके पास तीन स्वचालित पिस्तौल तथा २८७ गोलियाँ थीं। जरा सी देर में वह तीनों सैनिकों को मौत के घाट उतार सकते थे या वर्मा के सैनिकों को ही संकेत करते तो वही उनका काम तमाम कर देते। पर एक भारतीय दूसरे भारतीय के प्राणों का ग्राहक बने, यह उन्हें स्वीकार न था।

वह बंदी बनाकर मांडले के जेल में भेज दिए गए और एक दिन देश को स्वतंत्रता दिलाने के प्रयासों में फाँसी के तखते पर झूल गए।

मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले तथा हँसते-हँसते मौत को गले लगाने वाले ये वीर आत्मा की अनित्यता पर विश्वास करते थे। इसी विश्वास के कारण वे उस काल में अँगरेजी शासन से लड़े जिस समय कि उनके राज्य में सूर्य तक अस्त नहीं होता था। सत्य में कितनी शक्ति होती है? मनुष्य के विचारों व भावनाओं में कितनी शक्ति होती है, इसका ज्वलंत उदाहरण पाठक जी का जीवन है जो हमें सिखाता है कि अन्याय को सहन न करना, जो कुछ हो रहा है उसे अनुचित व अस्वाभाविक मानते हुए भी ऐसे चुपचाप बैठना मानव धर्म नहीं।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विस्मृत क्रांतिवीर
पंडित गेंदालाल दीक्षित

पति पर मृत्यु की छाया मँडराते देखकर पत्नी के धैर्य का बाँध टूट गया। वह रोने लगी। अपनी पत्नी को इस प्रकार रोते देखकर पति ने कहा–''तुम रोती हो तो रोओ, किंतु आखिर इस रोने से भी क्या मिलने वाला है? दुःख तो मुझे भी है। मैंने जिस बात का व्रत लिया था उसे मैं कितना निभा पाया? मर तो मैं रहा हूँ पर जिस कारण मैं मर रहा हूँ वह पूरा कहाँ हुआ? मैं यह देखकर मर रहा हूँ कि मैंने जो कुछ किया वह छिन्न-भिन्न हो गया। मुझे दुःख है कि मातृभूमि पर अत्याचार करने वाले से बदला नहीं ले सका, जो मन की बात थी, वह मन में ही रह गई। मेरा यह शरीर नष्ट हो जाएगा। मैं मोक्ष नहीं चाहता। मैं तो चाहता हूँ कि बार-बार इस धरती पर जन्म लूँ और बार-बार इसी के लिए मरूँ। ऐसा तब तक करता रहूँ जब तक कि देश गुलामी की जंजीरों से छूट न जाए।''

ये अंतिम शब्द थे मातृभूमि पर बलिदान हो जाने वाले देशभक्त क्रांतिकारी पं. गेंदालाल दीक्षित के। जिन्हें इस असहाय और अंजानी अवस्था में मरना पड़ा कि उस समय उनके पास न कोई शिष्य था न साथी, न कुटुंबीजन, न पत्नी और न कोई मित्र ही। सरकारी अस्पताल के लावारिस बीमार के रूप में २१ दिसंबर को इस क्रांतिकारी का अंतिम संस्कार संपन्न हुआ, अस्पताल के मेहतरों द्वारा। किसी ने आँसू नहीं बहाए, श्रद्धांजलियाँ अर्पित नहीं कीं, न किसी ने शहीदों की चिताओं पर गाया जाने वाला गीत ही गाया। किंतु जो वतन के लिए अपने सिर पर कफन बाँधकर निकलते हैं, उन्हें अपने इस दुःखद अंत पर कोई मलाल नहीं होता।

देश को अँगरेजी दासता से मुक्ति दिलाने के लिए कितने ही क्रांतिकारियों ने अपनी सुख-सुविधाओं और उनसे भी अधिक अपनी भावी प्रगति की संभावनाओं को ठुकराकर उस पथ का वरण किया जिस पर फाँसी, जेल, आजीवन कारावास, दुःख, अभाव और यंत्रणाओं का साम्राज्य था। कुछ प्रयास संगठित रूप से चले तो कुछ छिटपुट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रूप से। किंतु वे सब क्रांतिकारी जो प्रकाश में आए या गेंदालाल दीक्षित की तरह अप्रकाशित ही रह गए, वस्तुतः युग की पुकार को सुनकर अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर युगधर्म पालने वाली सजग आत्माएँ ही थीं।

पं. गेंदालाल दीक्षित ने अपने क्रांतिकारी संगठन को अन्य क्रांतिकारी संगठनों से जोड़ने का प्रयास तो किया, पर वे उसमें सफल नहीं हो सके। उनका यह प्रयास छिटपुट आंदोलन बनकर रह गया। किंतु इतने से ही उसका महत्त्व कम नहीं हो जाता। क्रांति एक व्यक्ति या उसके थोड़े से साथियों के द्वारा संपादित हो जाए, यह आवश्यक नहीं। उसके लिए तो कई पीढ़ियाँ खप जाती हैं। रामप्रसाद 'बिस्मिल' व मुकंदीलाल जैसे क्रांतिकारी उनके द्वारा ही बनाए गए थे। उनके इस बलिदान ने उन्हें बड़ी शक्ति दी थी।

पंडित गेंदालाल दीक्षित का जन्म आगरा जिले के बटेश्वर ग्राम में ३० नवंबर, १८९० को हुआ था। पैदा होते ही वे मातृसुख से वंचित हो गए। उनकी ताई ने उनका पालन-पोषण किया।

परिवार की स्थिति साधारण ही थी। किसी तरह उन्होंने इण्टर पास किया जो उस समय को देखते हुए काफी महत्त्वपूर्ण बात थी। इण्टर पढ़े-लिखे लोग उन दिनों अच्छे-अच्छे पदों पर थे। उनकी आगे पढ़ने की इच्छा थी पर घर की खस्ता हालत इसकी इजाजत नहीं देती थी। अतः इण्टर पास करके वे अध्यापक बन गए।

एक सामान्य परिवार के व्यक्ति के लिए इण्टर तक पढ़ जाना और अध्यापक की अच्छी-भली नौकरी पा जाना एक प्रकार से जिंदगी की नाव के किनारे लग जाने जैसा ही काम था। पर डी. ए. वी. स्कूल में कार्य करते हुए व आर्यसमाज जैसी क्रांतिकारी संस्था के संपर्क में रहते हुए देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत हृदय वाले दीक्षित जी के लिए इसी ढर्रे से बँधे रहना संभव नहीं था। हृदय की आग तो समय की हवा का झोंका पाकर भभक पड़ने को तैयार बैठी थी।

बंगाल और महाराष्ट्र के क्रांतिकारी आंदोलन की चर्चाएँ सुन-सुनकर तो उनके युवा रक्त में उबाल आए बिना नहीं रहा। वे इसी विचार में रहते थे कि किसी न किसी प्रकार इन क्रांतिकारी संगठनों से संपर्क साधा जाए और मातृभूमि को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाए। किंतु उन्हें इस संबंध में कोई सूत्र हाथ नहीं लगा। सशस्त्र क्रांति का यह पथ एक प्रकार यों अनुपयुक्त ठहरता था कि गुप्त रूप से संचालित होने वाली इन गतिविधियों को न तो सामान्य व्यक्ति समझ सकता था, न भाग ले सकता था और न ही इनसे व्यापक स्तर पर संगठन का हो सकना भी संभव था। किंतु इनमें से जब कोई देश के नाम पर हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को चूमता था तो उससे जन-जन का अंत:स्थल झकझोर उठता था। कहना न होगा कि देशभक्ति की प्रबल उमंगें जगाने की दिशा में यह असहयोग व सत्याग्रह से भी अधिक प्रभावी था।

बाहरी क्रांतिकारी संगठनों से संपर्क करने के लिए वे अधिक दिनों चुप नहीं बैठ सकते थे। उन्होंने अपने ढंग से क्रांति की मशाल जलाने का निश्चय करके एक समिति बनाई जिसका नाम 'शिवाजी समिति' रखा गया। इस समिति का उद्देश्य देश को स्वतंत्र कराना था। उन्होंने सोचा कि पढ़े-लिखे लोगों से इस संबंध में समुचित सहायता मिलेगी किंतु वैसा हुआ नहीं। जिन लोगों के संपर्क में वे आए उनमें प्राय: सभी इसी प्रकार के थे, जो पढ़-लिखकर उच्च पद पाने या धन कमाने के ही चक्कर में रहते थे। उन्हें अपने पिछड़े हुए क्षेत्र के पढ़े-लिखे लोगों के इस दृष्टिकोण को जानकर बड़ा दु:ख हुआ कि पढ़े-लिखे लोग उन्नति से अभिप्राय अपनी व्यक्तिगत उन्नति ही समझते हैं, देश व समाज की नहीं। उनका यह नितांत व्यक्तिवादी दृष्टिकोण गेंदालाल दीक्षित को बहुत अखरा और वे ऐसे लोगों की ओर से निराश हो गए।

भावना का जहाँ तक प्रश्न है देश को स्वतंत्र कराने के लिए सर्वस्व दाँव पर लगा देना उनके बाएँ हाथ का खेल था, पर योजनाबद्ध काम करने में वे कुछ आवश्यकता से अधिक जल्दबाज थे। वे प्रयास करते तो पढ़े-लिखे लोगों में से भी कुछ सहायक बना सकते थे, थोड़े प्रयास से।

पढ़े-लिखे लोगों से हटकर उनका ध्यान चंबल के बीहड़ों में बसने वाले डाकुओं की ओर गया। यदि उनमें से कुछ लोग ही उनके सहायक बन जाएँ तो काम बन सकता है। वे उनके लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। ये डाकू लोग मरने मारने में डरते नहीं, साथ ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निशाना बाँधकर गोलियाँ चलाने और मोर्चेबंदी के मामले में भी पक्के होते हैं। उनकी सहायता मिल जाए तो उन्हें धन की भी किल्लत नहीं रहेगी। जब जितना चाहेंगे डाका डालकर धन जुटा लिया करेंगे।

यों डाकू भी मनुष्य होते हैं। वाल्मीकि भी एक डाकू ही थे जो आगे चलकर ऋषि बन गए थे। सुधरकर तो वे भी अच्छे आदमी बन सकते हैं, पर यह कोई एक दिन में या कुछ महीनों में संभव नहीं होता। साथ ही उनके मन में भी अच्छे बनने का संकल्प जागे तब की बात है। उनकी बुरी आदतें और अपराधी-वृत्ति एक दम समाप्त नहीं हो सकती और न ही सब डाकू वाल्मीकि बन सकते हैं।

इस प्रयास में उन्हें पहले तो सफलता मिली। ब्रह्मचारी नाम का एक साहसी और जीवट वाला डाकू उनका सहायक बन गया। वह हर समय प्राण हथेली पर रखकर सशस्त्र क्रांति का काम किया करता था। वह भी पहले डाकू ही था, पर अब वह देश के काम आकर अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहने लगा था।

डाकुओं को क्रांतिकारी बनाने के क्रम के साथ ही पं. गेंदालाल दीक्षित ने कुछ विद्यार्थियों को भी क्रांतिकारी आंदोलन के लिए तैयार किया था। जिनके नेता पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' और औरैया के मुकंदीलाल आदि थे जिन पर बाद में गेंदालाल दीक्षित को जेल से छुड़ाने के असफल प्रयास के सिलसिले में मैनपुरी षड्यंत्र के नाम से केस चलाया गया था। इस टोली का नाम 'मातृवेदी' रखा गया।

पंडित गेंदालाल यदि डाकुओं को क्रांतिकारी बनाने के फेर में न पड़ते और युवकों को ही संगठित करके कुछ काम करते तो बहुत संभव था कि वे इतने शीघ्र पकड़े नहीं जाते, पर वे तो समझते थे कि जिस प्रकार ब्रह्मचारी उनका दाहिना हाथ बन गया है वैसे ही और डाकू भी उनके साथ निष्ठावान बने रहेंगे। किंतु वैसा नहीं हो सका। एक डाकू पुलिस से मिल गया। उसी के कारण वे पकड़े गए।

मुखबिर बन गए डाकू ने पुलिस वालों को उनके दल के संबंध में पूरी सूचना दे दी थी। मुठभेड़ के समय दल के कई लोग मारे गए, कई भाग गए। ब्रह्मचारी और पंडित गेंदालाल पकड़े गए।

ग्वालियर जेल में उन्हें न तो ठीक से खाना मिलता था और न ही किसी प्रकार की कोई सुविधा ही। क्योंकि डाकुओं के साथ पकड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाने पर उन्हें भी डाकू ही समझा गया था। अस्वास्थ्यकर वातावरण, अपर्याप्त भोजन व कठोर श्रम करने के कारण उन्हें टी. बी. हो गई।

उनके शिष्यों–'मातृवेदी' टोली के युवकों ने उन्हें छुड़ाने के लिए योजना बनाई, किंतु वह भी सफल नहीं हुई। योजना कार्यान्वित होने के पहले ही उनमें से एक लड़का मुखबिर बन गया। उनमें से अधिकांश पकड़े गए, केवल पंडित रामप्रसाद 'बिस्मिल' बच निकले। इन युवकों पर मैनपुरी षड्यंत्र केस चलाया। उन्हीं के पकड़े जाने पर पंडित गेंदालाल के क्रांतिकारी होने का पता चला और उन्हें ग्वालियर जेल से मैनपुरी लाया गया। यहाँ से वे युक्तिपूर्वक जेल से भाग निकले। किंतु घर जाने पर घर वालों ने भी पुलिस के भय से उन्हें अधिक दिनों अपने पास नहीं रखा। क्योंकि इस पिछड़े इलाके के लोग देश और क्रांति का अर्थ ही नहीं जानते थे। उनकी नजर में तो वे अपराधी थे। पुलिस उनके पीछे पड़ी थी। सो उन्हें अपने जर्जर शरीर को लेकर दिल्ली भाग जाना पड़ा।

वहाँ अपने को अनपढ़ बताकर एक प्याऊ में पानी पिलाने की नौकरी करते हुए स्वास्थ्य-लाभ का प्रयास किया, पर सफल न हो सके। फरारी का जीवन और ऊपर से बीमार शरीर। हारकर अपने एक विश्वासी मित्र को पत्र लिखा। वे मित्र पंडित गेंदालाल की पत्नी को साथ लेकर आए। उन्होंने शक्ति भर प्रयास किया उन्हें बचाने का, पर जब कुछ संभव नहीं हो सका तो उन्हें छद्म नाम से सरकारी अस्पताल में भरती करा दिया गया। उनकी पत्नी ने तो बहुतेरा चाहा कि पति की सेवा करे पर उनके रिश्तेदारों ने मना किया, पुलिस द्वारा पकड़े जाने का भय दिखाया। अत: विवश हो उन्हें अकेला ही छोड़ देना पड़ा। वे अकेले और अनाम स्थिति में लावारिस की तरह मरे। एक क्रांतिकारी का यह दु:खद अंत हुआ।

असफलता के खंडहरों पर सफलता के प्रासादों की नींवें रखी जाती हैं। उनकी इस असफलता ने भावी क्रांतिकारियों को जो आधार दिया था उनका अपना महत्त्व है। पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' जैसे क्रांतिकारी उन्हीं की देन थे।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अन्याय के सामने सर न झुकाने वाले—लाला लाजपत राय

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतवर्ष की शिक्षा संस्थाओं की कैसी दशा थी, इसका अनुमान आजकल के लोग नहीं कर सकते, जब गली-गली में हाईस्कूल और इण्टर कॉलेज दिखाई पड़ते हैं। उस समय शहर भर में एकाध गवर्नमेंट स्कूल या कॉलेज होता था और उसके अतिरिक्त अगर हो सका तो एकाध 'मिशन स्कूल'। हमारे देश के बड़े-बड़े पुराने राजनीतिक और सामाजिक नेताओं ने इन मिशन स्कूलों और कॉलेजों में ही शिक्षा प्राप्त की थी। पर ये संस्थाएँ जहाँ छात्रों को अँगरेजी भाषा और अन्य विषयों की शिक्षा देती थीं, वहाँ उनकी जातीयता की भावना को निर्बल करके उन्हें विदेशी भावापन्न बनाने की चेष्टा भी करती थी। सरकारी शिक्षा संस्थाओं का उद्देश्य तो उनके संस्थापक मैकाले साहब ने 'अँगरेज सरकार के कार्यालयों के लिए क्लर्क' तैयार करना निश्चित कर दिया था। ईसाई पादरी अपने स्कूलों में लड़कों को ईसाई धर्म की विशेषताएँ और हिंदू धर्म की त्रुटियाँ बतलाकर, इस बात की कोशिश करते रहते थे कि उनका झुकाव उनके धर्म की तरफ हो जाए।

यह स्थिति देश के सभी हितैषियों और भारतीय संस्कृति के प्रेमियों को खटकती थी और जहाँ तक संभव था वे इसके प्रतिकार का उपाय करते थे। पंजाब में इस तरफ सबसे पहले ध्यान देने वाले लाला लाजपत राय और महात्मा हंसराज थे। एक अवसर पर उन दोनों में इस विषय पर चर्चा होने लगी तो लालाजी ने कहा-"मुझे अँगरेजों की शिक्षा का यह ढंग पसंद नहीं।"

हंसराज-हाँ, अँगरेजी स्कूलों में हमारे देश के इतिहास को तोड़-मरोड़कर पढ़ाया जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लालाजी–इसके अतिरिक्त यह ढंग बहुत ही महँगा और खरचीला है। गरीब लड़के तो पढ़ ही नहीं पाते। कॉलेज से पढ़कर जो लड़के निकलते हैं, वे पूरे साहब होते हैं। उनके मन में देशवासियों के लिए प्रेम नहीं होता।

हंसराज–पर उपाय क्या है? अँगरेज तो चाहते ही हैं कि पढ़े-लिखे लोगों के मन में देशप्रेम न हो।

लालाजी–मैं चाहता हूँ कि एक ऐसा कॉलेज खोला जाए जिसमें अँगरेजी के साथ हिंदी और संस्कृत भी पढ़ाई जाए। इससे नवयुवक अपने अतीत-गौरव को समझेंगे और देशप्रेम करना सीखेंगे।

हंसराज–विचार तो अच्छा है। अगर इस कॉलेज का खरच थोड़ा हो तो गरीब लड़के भी पढ़ सकते हैं।

लालाजी–यही मैं चाहता हूँ।

हंसराज–पर इसके लिए धन कहाँ से आएगा?

लालाजी–अगर आप सब सहयोग दें तो धन की चिंता नहीं। जब हम जनता की सेवा करेंगे तो वह हमें धन भी देगी।

यह विचारधारा कुछ ही समय में परिपक्व हो गई और इसके परिणामस्वरूप लाहौर में 'दयानंद ऐंग्लो वैदिक कॉलेज' की स्थापना की गई। इसमें दूसरे कॉलेजों की अपेक्षा आधी ही फीस ली जाती थी और अँगरेजी के साथ धार्मिक शिक्षा देने की व्यवस्था भी थी। लालाजी ने अपने पास से धन देने के सिवाय नगरों में चारों तरफ घूमकर और झोली फैलाकर बहुत सा चंदा भी इकट्ठा किया। लाहौर के कॉलेज के अच्छी तरह चल निकलने के बाद जालंधर, होशियारपुर आदि अन्य नगरों में भी ऐसे ही 'डी. ए. वी. कॉलेज' खोले गए, जिनसे उस प्रांत में जातीयता की एक नई लहर सी पैदा हो गई।

लाला लाजपत राय (सन् १८६५ से १९२८) स्वयं एक गरीब घर में उत्पन्न हुए थे। उनके पिता एक मिडिल स्कूल में बहुत थोड़े वेतन पर नौकरी करते थे और इस कारण उन्होंने इण्टर तक की शिक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बड़ी कठिनाइयों में जीवन व्यतीत करके प्राप्त की थी। इसके बाद उन्होंने मुखतारी की परीक्षा दी, जिसमें तीस परीक्षार्थियों में उनका दूसरा नंबर आया। इसके बाद जब उन्होंने अदालत में मुखतारी आरंभ की तो उनको बहुत शीघ्र सफलता मिली और तीन-चार वर्ष में ही हिसार जिले के सबसे मशहूर वकील बन गए। उनकी आमदनी भी काफी बढ़ गई, पर इसका उपयोग उन्होंने अपनी सुख-सुविधा के लिए न करके परोपकार के लिए ही किया। आरंभ में हिसार की आर्य समाज को डेढ़ हजार रुपया दान देकर उसकी व्यवस्था दृढ़ कराई। फिर वहाँ एक संस्कृत विद्यालय भी स्थापित किया।

कुछ वर्ष बाद जब वकील की हैसियत से इनका नाम और अधिक प्रसिद्ध हो गया तो वे हिसार से उठकर लाहौर चले गए और वहाँ के चीफ कोर्ट में वकालत करने लगे। वहाँ पर उनकी आमदनी और भी बढ़ी, पर उसके साथ ही उनकी दानशीलता तथा समाज सेवा की प्रवृत्तियाँ भी बढ़ती जाती थीं। डी. ए. वी. कॉलेज का जिक्र तो ऊपर किया ही जा चुका है, उसके अतिरिक्त लाला जी का दूसरा बड़ा कार्यक्षेत्र अछूतोद्धार था। हिंदू जाति अपने करोड़ों भाइयों को इस प्रकार पतित और दलित बनाए रहे, यह उनको बड़ा अन्यायपूर्ण लगता था। इसलिए उन्होंने कांगड़ा (पंजाब) तथा संयुक्त प्रांत के पहाड़ी इलाकों में दौरा करके, वहाँ के अछूतों में बहुत काम किया। सबसे बड़ी आवश्यकता उन लोगों में शिक्षा प्रचार की जान पड़ी, जिससे वे अपनी हालत को समझ सकें और अपने पैरों पर खड़े हो सकें। इसके लिए उन्होंने जगह-जगह पाठशालाएँ खुलवाईं और इस कार्य में अपने पास से ४० हजार रु. खरच किया। इसके सिवाय उन्होंने बहुत उद्योग करके यह भी व्यवस्था की कि आर्यसमाज के समस्त स्कूलों और गुरुकुलों में अछूत विद्यार्थी बिना भेदभाव के शिक्षा प्राप्त कर सकें।

जब राजस्थान, मध्यप्रांत और उड़ीसा में भयंकर अकाल पड़ा तो लाला जी ने उन स्थानों में पहुँचे भूखों मरने वालों की रक्षा का बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उद्योग किया। लाखों रुपया इकट्ठा करके लोगों को सहायता पहुँचाई गई और फीरोजपुर के अनाथालयों से पहुँचाया गया। ईसाई पादरी भी इन क्षेत्रों में सहायता का कार्य कर रहे थे, पर वे इस संकट से लाभ उठाकर सैकड़ों हिंदू बच्चों को ईसाई भी बना रहे थे। लालाजी ने इसका विरोध किया और जहाँ तक संभव हुआ हिंदू-बालकों को हिंदू-संस्थाओं में ही भिजवाया।

पर इससे यह न समझ लेना चाहिए कि लाला जी अधिकांश हिंदुओं या आर्यसमाजियों की तरह कट्टर धार्मिक थे। वे वास्तव में बुद्धिवादी थे और धर्म के उसी स्वरूप को मानते थे जिससे व्यक्ति और समाज का सुधार एवं उत्थान हो सके। उन्होंने वंदेमातरम् नामक उर्दू पत्र में डंके की चोट पर लिखा था–"मेरा मजहब हक परस्ती (सत्य पर स्थिर रहना) है, मेरी मिल्लत (मेल) कौमपरस्ती (जातीयता) है, मेरी इबादत (पूजा) खलकपरस्ती (मानव सेवा) है, मेरी अदालत मेरा अंत:करण है, मेरी जायदाद मेरी कलम है, मेरा मंदिर मेरा दिल है और मेरी उमंगें सदा जवान हैं।" एक अन्य अवसर पर उन्होंने कहा था–"धर्म सिखाया नहीं जाता, वह उसी वातावरण में उन्नति करता है, जिसमें विचारों की मलिनता हटा दी गई हो। ठीक विचार, सही अनुभव और उचित कार्य को ही धर्म मानना चाहिए।" वे हिंदू-समाज में प्रचलित सभी हानिकारक रूढ़ियों के विरुद्ध थे और कहते थे–"जो धर्म समाज के वर्तमान दूषित ढाँचे को कर्मों (भाग्य) के आधार पर सही बताए और जायदाद, विरासत (उत्तराधिकार) तथा विवाह संबंधी प्रचलित नियमों का समर्थन करे, वह झूठा है।"

लाला जी उन लोगों में से थे जिनकी 'कथनी और करनी' में एकता रहती है। वे धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में सुधारवादी थे और उसी के अनुसार स्वयं भी चलते थे। इसमें वे किसी के विरोध अथवा मतभेद की परवाह भी नहीं करते थे। इस संबंध में उन्होंने बातचीत करते हुए सेठ गोविंददास से कहा था–"गोविंददास,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मैं ऐसे आदमी को कोई बहुत अच्छा आदमी नहीं समझता जिसका कोई विरोधी ही न हो। ऐसा आदमी या तो किसी तरह की दम-खम रखने वाला नहीं होता या वह अब्बल नंबर का धोखेबाज होता है।'' लाला जी अपने विरोधियों का सामना भी बड़े जोर से करते थे और एक लेखक के कथनानुसार, ''उनके विरोधी उनकी वाणी और कलम की चोट से तिलमिला उठते थे। सन् १९२६ में जब कांग्रेस ने कौंसिल प्रवेश की आज्ञा दे दी तो पं. मोतीलाल जी नेहरू से उनका मतभेद हो गया। उस समय लाला जी ने मालवीय जी के साथ मिलकर 'स्वतंत्र कांग्रेस दल' की स्थापना की और स्वराज्य पार्टी के उम्मीदवार को बहुत बुरी तरह हरा दिया।''

सन् १९०७ में जब उन्हें देश निकाले का दंड देकर मांडले (वर्मा) भेजा गया, उसके बाद से उनका जीवन राजनीतिमय ही हो गया। यों तो कांग्रेस में वे सन् १८८८ से ही भाग ले रहे थे और सन् १९२० में कलकत्ते में होने वाले कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष भी बनाए गए थे। सन् १९०५ में तथा १९१४ में उन्हें कांग्रेस की तरफ से विदेशों में प्रचार करने इंगलैंड आदि में भेजा गया। दूसरी यात्रा के अवसर पर वे प्रचारार्थ अमेरिका भी चले गए और उसी समय प्रथम यूरोपीय महायुद्ध छिड़ जाने से उनका भारत में आना रोक दिया गया। इसलिए वे सन् १९१९ तक अमेरिका में ही रहे और वहीं पर भारत के संबंध में अपने लेख और पुस्तकें लिखकर देश सेवा करते रहे। उन पुस्तकों में 'यंग इंडिया' बहुत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।

महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भी आपने पूरी तरह भाग लिया और सन् १९२१ में 'क्रिमनल ला रीमेंडमेंट एक्ट' के अंतर्गत गिरफ्तार भी किए गए। यद्यपि वे महात्मा गांधी के अंध अनुयायियों में से नहीं थे, पर जब कभी और जहाँ कहीं देश के सम्मान का प्रश्न सामने आया, वे कभी पीछे नहीं हटे और हर तरह का कष्ट सहन करते रहे। सन् १९२८ में जब कांग्रेस ने 'साइमन कमीशन' के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बायकाट का आदेश दिया तो उन्होंने लाहौर में उसका बायकाट बड़े जोरों से किया। पुलिस ने भीड़ को रोकने के लिए काँटेदार तार लगा दिए थे, पर लोग फिर भी न रुके। इस पर पुलिस ने लाठी चार्ज किया। लाला जी ही उस जुलूस में सबसे आगे थे, इसलिए सबसे अधिक लाठियाँ उन्हीं पर पड़ीं। पर उनसे भयभीत होने की बजाय लालाजी ने गर्जना करते हुए कहा, ''मेरे ऊपर पर पड़ी एक-एक चोट भारत में स्थापित ब्रिटिश साम्राज्यवाद की अरथी के लिए एक-एक कील साबित होगी।'' और वास्तव में ऐसा ही हुआ। इस घटना के फलस्वरूप पंजाब के अनेक युवकों में विद्रोह की भावना उमड़ पड़ी और अंत में भगतसिंह ने लाला जी पर लाठी चलाने वाले असिस्टेंट पुलिस सुपरिंटेंडेंट सौंडर्स को गोली से ही उड़ा दिया।

लाला जी बड़े उद्योगी और पुरुषार्थी थे। उन्होंने अपने ही बलबूते पर लाखों रुपया कमाकर परोपकार और देश सेवा के कामों में खरच किया। अपना उदाहरण दिखलाकर वे अपने देशवासियों को भी यह उपदेश देते थे-''यह विचार त्याग दो कि हमारा जीवन दुःखमय है और यह हमारे दुर्भाग्य का फल है। हमारे देश के लोगों की यह धारणा ऐसी पक्की है कि इसे मिटा देना सहज नहीं है। इसलिए जरूरत इस बात की है कि जोरों से यह प्रचार किया जाए कि यह जीवन ही सत्य है, साथ ही कीमती है। उत्साहपूर्वक इस जीवन की रक्षा करना और इसे उपयोगी तथा सुखी बनाना हमारा कर्त्तव्य है।'' इस सिद्धांत के आधार पर वे अंत तक अपनी शक्ति देशवासियों के जीवन को समुन्नत बनाने में लगाते रहे। अंत में उन्होंने अपना सर्वस्व 'सरवैंट आफ पीपुल्स सोसाइटी' के लिए अर्पण कर दिया, ताकि देशभक्त युवक जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक साधन पाकर अपना पूरा समय जनकल्याण के कार्यों में लगा सकें।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अमर शहीद—डॉक्टर मथुरा सिंह

भारतीय स्वाधीनता संग्राम को और अधिक तीव्र करने के लिए तथा विदेशी सरकारों एवं जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए देश के कई सपूत उन दिनों बाहर के देशों में जाया करते थे। डॉ. मथुरा सिंह भी रूस जाने वाले थे। उन्होंने प्रस्थान किया ही था कि किसी ब्रिटिश गुप्तचर को इसका पता लग गया और उन्हें गिरफ्तार होना पड़ा। गिरफ्तार की हालत में उन्हें लाहौर लाया गया। उन दिनों जलियाँवाला बाग हत्याकांड के कर्णधार डायर का वहाँ शासन था। कई राष्ट्रवादियों को मौत के घाट उतार दिया जाता था। दमन, अत्याचार और अन्याय का बोलबाला था। उन दिनों ऐसी दशा में न्याय और रियायत की आशा ही कैसे की जा सकती थी?

डॉ. मथुरा सिंह को राजद्रोह के अपराध में फाँसी की सजा सुनाई गई। १७ मार्च, १९१७ को फाँसी होनी थी और उसके एक दिन पूर्व डॉ. मथुरा सिंह का छोटा भाई उनके पास आकर बिलख-बिलख कर रोया। डॉक्टर सिंह ने उसे धीरज बँधाते हुए कहा–"छि:! पगले रो रहा है। दूसरों के लिए जान देना तो सिखों के लिए बहुत पुरानी परिपाटी हो गई है। तुम्हें तो गर्व करना चाहिए कि तुम्हारा भाई अपने देश के लिए अपनी जान न्योछावर कर रहा है।"

इस दृश्य को देखकर जेल के अधिकारी भी आश्चर्यचकित रह गए। एकमात्र बड़े भाई का साया सर से उठता देखकर छोटे भाई का दुखी होना स्वाभाविक था। दादरशाही के पुरजों ने शायद छोटे के आँसुओं से पसीजकर अपने निर्णय पर पुनर्विचार किया होगा।

एक अधिकारी इस निर्णय का प्रस्ताव लेकर मथुरा सिंह के पास पहुँचा और बोला–"यदि तुम अपने किए के लिए क्षमा माँग लो और आगे से ऐसी गलती न करने का वचन दो तो सरकार तुम्हारी सजा कम कर सकती है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''परंतु मैंने क्षमा माँगने जैसा काम ही क्या किया है?''– डॉक्टर ने कहा।

तुमने अभी दुनिया में देखा ही क्या है मथुरा सिंह। इस अवसर को हाथ से मत खोओ।

मथुरा सिंह इस पर आग बबूला हो उठे और बोले–''मुझे फाँसी हो रही है। तुम समझते हो क्या मैं इससे दुखी हूँ। नहीं मुझे बड़ी खुशी और गर्व है कि मैंने विप्लव को सफल बनाने के लिए मुझसे जो कुछ हो सका किया है।''

इस दृढ़ निश्चयी शूरमा ने बड़ी शान के साथ अगले दिन फाँसी का फंदा चूम लिया। देश के लिए कई वीरों ने अपनी आत्माहुति दे दी, उन्हीं की श्रेणी में डॉ. मथुरा सिंह भी अग्र पंक्ति में जा बैठे। ३४ वर्ष की अवस्था में उन्होंने जो साहस, लगन और देशप्रेम का परिचय दिया वह अन्यत्र कहीं मिलना दुर्लभ है।

डॉ. मथुरा सिंह का जन्म झेलम जिले के ढुटियाल गाँव में सन् १८८३ में हुआ। परिवार की स्थिति बहुत सामान्य थी। उन्हें कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा परंतु मजाल कि चेहरे पर थोड़ी सी शिकन भी आ जाए। गरीब और विपन्न परिवारों में ही अक्सर विभूतियाँ पलती हैं। सामान्य से विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति में कई प्रकार की कठिनाइयों और अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है। जिन्हें सहते हुए उनकी उपेक्षा कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने का प्रशिक्षण ऐसे ही परिवारों में मिलना संभव है।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। परिवार ने उनके विकास हेतु बाद में शहर भेजा परंतु हाईस्कूल तक ही पढ़ पाए। डॉक्टर मथुरा सिंह को चिकित्सा विज्ञान में असाधारण लगाव था। परिवार की स्थिति ऐसी नहीं थी कि उन्हें डॉक्टरी पढ़ा सकें। हाईस्कूल भी वे बड़ी मुश्किल से कर पाए थे। परंतु लगन और श्रम के आगे दैन्य और दरिद्रता क्या अवरोध पैदा कर सकते हैं। डॉक्टर मथुरा सिंह ने नौशेरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छावनी में नौकरी कर ली और चिकित्सा विज्ञान का स्वयं ही अध्ययन करने लगे। इस विषय में उन्होंने कई डॉक्टरों का भी सहयोग लिया। मधुर, नम्र और शिष्ट व्यवहार से किसी को भी अपने वश में किया जाता है। दूसरों को सम्मान देने का स्वभाव हर किसी का सहयोग उपलब्ध करा सकता है। ऐसे कई डॉ. जो अपने कार्य में तो अति कुशल हुआ करते थे परंतु दूसरों को सहयोग देने के लिए कभी तैयार नहीं होते। डॉ. साहब ने अपनी नम्रता और सेवाभाव की चातुरी से उनका अनुग्रह प्राप्त किया।

स्वाध्याय के बल पर उन्होंने अपने कार्य में बड़ी दक्षता प्राप्त कर ली परंतु उन्हें संतोष नहीं हुआ। कहते हैं उस समय उनके क्षेत्र में जितने भी कुशल डॉक्टर थे उन सबका सहयोग मथुरा सिंह ने प्राप्त कर लिया था। अब वे चिकित्सा विज्ञान के उच्च अध्ययन हेतु विदेश जाने की तैयारी करने लगे। कुछ ही दिनों बाद वे अमेरिका रवाना भी हो गए।

उनकी यह यात्रा भी बड़ी आकस्मिक रही। वे संयोग से सभी प्रकार के पारिवारिक उत्तरदायित्वों से मुक्त हो चुके थे। पत्नी और पुत्र का आकस्मिक निधन उन्हें कुछ समय को व्यथित अवश्य कर गया। परंतु मनस्वी मथुरा सिंह ने तुरंत ही अपनी मनोदशा सुधार ली। इस वेदना को परमात्मा का मंगल विधान समझकर वे सह गए। अमेरिका जाते वक्त रास्ते में ही अर्थाभाव के कारण उन्हें चीन के शंघाई शहर में उतर जाना पड़ा। वहाँ वे चिकित्सा कार्य करने लगे। उस समय वहाँ चिकित्सकों की बड़ी कमी थी। डॉ. साहब ने काफी पैसा कमाया।

कुछ पैसा इकट्ठा हुआ तो वे अमेरिका की बजाय कनाडा के लिए रवाना हुए। कुछ कारणों से उन्हें शीघ्र ही वापस लौटना पड़ा। उस समय कनाडा के एक बंदरगाह से 'कोमा गाटा मारू' नामक जहाज भारत रवाना हो रहा था। उस जहाज में अस्त्र-शस्त्रों से लैस, उत्साही और साहसी क्रांतिकारी भरे हुए थे। उसी में डॉ. सिंह भी चढ़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गए। क्रांतिकारियों के संपर्क में आकर उन्होंने भी देशसेवा का संकल्प ले लिया। भारत वापस आने पर वे कलकत्ता (कोलकाता) से अमृतसर आए। तत्कालीन राजनीतिक वातावरण का अध्ययन कर वे बड़े क्षुब्ध हुए और सशस्त्र क्रांतिकारियों को संगठनबद्ध करने का कार्य करने लगे। उनके दल में अमेरिका से वापस लौटे भारतीय भी आकर शामिल होने लगे। संगठन दिनोदिन सुदृढ़ होता गया।

धीरे-धीरे देश भर में इस क्रांतिकारी संस्था के सदस्य फैल गए और गुप्त रूप से सभी स्थानों पर एक ही दिन इन्कलाव छेड़ देने का निश्चय कर लिया। पुलिस को इस संगठन की बू पहले ही लग गई थी। वह इस संगठन की गतिविधियों और सदस्यों का पता चलाने का प्रयास जी जान से कर रही थी। डॉ. मथुरा सिंह के संगठन के कुछ सदस्य पुलिस से मिल गए। पुलिस सूचना पाकर सदस्यों की धर-पकड़ करने लगी। एक क्रांति होने से पहले ही विफल हो गई। डॉ. मथुरा सिंह तो पुलिस की आँखों में धूल झोंककर काबुल पहुँच गए। उन दिनों राजा महेंद्र प्रताप ने भारत की अस्थायी सरकार घोषित कर रखी थी। डॉक्टर साहब उनसे जाकर मिले।

राजा महेंद्र प्रताप ने उन्हें रूस जाने की सलाह दी, परंतु दुर्भाग्य से वे रास्ते में ही पकड़ लिए गए।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वतंत्रता और समाजवाद के अग्रदूत डॉ. राम मनोहर लोहिया

सन् १९६७ का सितंबर मास और उसका अंतिम दिन। उसी दिन नई दिल्ली के बिलिंगडन हॉस्पीटल में डॉ. लोहिया की पौरुष ग्रंथि का ऑपरेशन हुआ। यह ऑपरेशन मामूली ही था परंतु दो दिन बाद उनकी हालत अचानक गंभीर हो गई। देश को उनकी जरूरत थी अत: पक्ष-विपक्ष के सभी नेताओं सहित देश की सारी जनता चिंतित हो उठी। इधर डॉ. लोहिया मृत्यु से संघर्ष करते हुए शायद थकते से जा रहे थे। उनके स्वास्थ्य संरक्षण हेतु लंदन, जर्मनी और अमेरिका न जाने कहाँ-कहाँ से डॉक्टर बुलाए गए। लोहिया की मूर्च्छा निरंतर बनी ही रहती और जब भी कभी वे होश में आते तो अपने आस-पास डॉक्टरों को देखकर प्रलाप सा करने लगते-"मेरे अकेले के लिए इतने डॉक्टर। करोड़ों एक डॉक्टर का भी चेहरा नहीं देख पाते।"

कभी वे चीखते-"लाखों का क्या होगा? किसानों का क्या होगा? मजदूरों का क्या होगा?"

ये दिन लोहिया के अंतिम दिन थे। ऑपरेशन के १० दिन बाद तो वे सदा के लिए चले गए परंतु मरते समय भी वे उस वर्ग के लिए इतने बेचैन रहे जिसके लिए जीवन भर प्रयत्न और संघर्ष करते रहे।

मरते समय भी समाज के पिछड़े, गरीब और मजदूर वर्ग के लिए व्यक्ति में इतनी टीस हो, इतनी कसक हो उस व्यक्ति की आंतरिक स्थिति का थाह लेना भी कठिन है। जिन्होंने केवल इसलिए परिवार नहीं बसाया कि सारा देश उनका परिवार था। जिन्होंने केवल इसलिए घर नहीं बसाया कि देश का कोना-कोना उनका घर था और जिन्होंने इसलिए किसी पर रहम नहीं खाया कि उनका हर कोई अपना था। देश के लिए फाँसी के फंदे पर चढ़ जाने वाले शहीदों तथा गोली खाकर आत्मोत्सर्ग कर जाने वाले नरवीरों की देशभक्ति अभिवंदनीय है, परंतु उनसे भी ज्यादा अभिवंदनीय है-लोहिया जैसे महापुरुषों की निष्ठा जो तिल-तिलकर देश के लिए जिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्तर प्रदेश के अकबरपुर कसबे में हीरालाल लोहिया की धर्मपत्नी चंदा की कोख से डॉ. राम मनोहर लोहिया का जन्म २३ मार्च, १९१० ई. को हुआ था। लोहिया परिवार पर मृत्युदेवता की कुछ ऐसी दृष्टि पड़ी हुई थी कि एक-एक कर उस परिवार के सदस्य विदा हो रहे थे। कहा जाता है कि उनके परिवार को किसी साधु का शाप था और इसी कारण लोहिया वंश नष्ट होता जा रहा था। पता नहीं कहाँ तक सच है परंतु दादा और पिता को अपने इकलौते पौत्र और पुत्र की चिंता थी तथा वे मन ही मन भगवान से यह कामना किया करते थे कि हमारी उमर भी इसे दे दे।

राम मनोहर को तो कोई जीवन क्षति नहीं हुई परंतु उनकी माता उन्हें लगभग तीन वर्ष का छोड़कर ही प्रयाण कर गईं। मातृसुख की अनुभूति भी जिस हृदय को छू न पाई वह हृदय अकस्मात ही मातृसुख से वंचित हो गया। माँ के अभाव में राम मनोहर की दादी ने उनका पालन-पोषण किया। हीरालाल की माँ अपने बेटे से बार-बार कहती रही कि फिर से शादी कर ले परंतु उन्होंने कभी इसके लिए हामी नहीं भरी। उस समय हीरालाल जी युवावस्था में ही थे परंतु पुत्र के सुख-दुःख की उन्हें इतनी चिंता थी कि अपने लाड़ले को सौतेली माँ के संरक्षण में नहीं सौंपना चाहते थे। आखिर दादी की देख-रेख में ही उनका पालन-पोषण हुआ।

लोहिया परिवार की आर्थिक स्थिति मध्यम श्रेणी की ही थी। कभी उनके पूर्वज लोहे का व्यापार किया करते थे और उससे खूब आमदनी होती थी। लेकिन उस समय वे लोग मिर्जापुर में रहते थे। मिर्जापुर छोड़कर जब से अकबरपुर आकर बसे तभी समृद्धि और संपन्नता के वे दिन भी जाते रहे और धन को खुले हाथों खरच करना भी स्मृति भर में रह गया। आर्थिक स्थिति भले ही अच्छी न हो परंतु बच्चों के विकास में आवश्यकता होती है स्नेह और दुलार की-प्रेम और विवेक की जो हीरालाल जी अपने संपूर्ण हृदय और समस्त साधनों से लुटाते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी प्रकार लाड़-प्यार से राम मनोहर पाँच वर्ष के हुए और उन्हें घर के पास ही एक स्कूल में भरती कराया गया। प्राइमरी स्कूल की परीक्षाएँ पास करने के बाद उन्हें तमसा पार स्टेशन के पास हाईस्कूल में भरती करवाया गया। स्कूल जाते हुए उन्होंने एक दिन देखा २०-२१ वर्ष का एक जवान युवक एक छोटे से बच्चे को पीट रहा है। राम मनोहर को लगा यह अन्याय हो रहा है और वे युवक से भिड़ गए। अन्याय के विरुद्ध प्रतिकार की यह भावना उन्होंने अपने पिता से विरासत में पाई थी जो अपने ही जैसे असंख्य देशभक्तों के साथ सबसे बड़े अन्याय चक्र के विरुद्ध अपनी शक्तियों को केंद्रित किए हुए थे-अंग्रेज सरकार के विरुद्ध। हीरालाल जी कांग्रेस के कामों तथा स्वराज्य आंदोलन के कार्यक्रमों में रुचिपूर्वक भाग लेते थे और देशभक्ति का यही गुण अपने पुत्र को भी विरासत रूप में दे जाना चाहते थे। यही कारण था कि सन् १९१८ में जब वे अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में गए तो बालक राम मनोहर को भी साथ लेते गए। देशभक्ति और स्वातंत्र्य प्रेम की यह भावना इसी कारण उनमें इतनी बलवती हो उठी कि सन् १९२४ में जब वे मात्र १४ वर्ष के थे, तब कांग्रेस के गया अधिवेशन में स्वयं ही गए।

अगले साल मैट्रिक की परीक्षा पास कर वे बनारस विश्वविद्यालय में भरती हुए। तब काशी विश्वविद्यालय शिक्षा जगत में अपना अनूठा स्थान बना चुका था। यहाँ न केवल शैक्षणिक डिग्रियाँ बाँटी जाती वरन छात्रों में भारतीय जीवन की मर्यादाओं और आदर्शों के प्रति निष्ठा व देशभक्ति के बीज भी बोए जाते थे। यहीं रहकर लोहिया ने खद्दर पहनना शुरू किया और सोलह वर्ष की उम्र में गोहाटी कांग्रेस अधिवेशन में प्रतिनिधि की हैसियत से गए।

इण्टर से आगे की शिक्षा के लिए वे कलकत्ता (कोलकाता) अपने पिता के पास चले गए। हीरालाल जी ने तब अपना कारोबार वहीं जमा लिया था। वहाँ आते समय तक उनमें राष्ट्रीयता की उद्दाम भावनाएँ लहराने लगी थीं। तब वे किशोरावस्था की देहलीज पार कर युवावस्था में भी प्रवेश कर चुके थे। अतः कलकत्ता आने के बाद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने अपना नाम विद्यासागर कॉलेज में लिखाया। यहाँ का शिक्षा स्तर तब सबसे गिरा हुआ माना जाता था लेकिन लोहिया के द्वारा यही कॉलेज चुने जाने का एक कारण था। दरअसल वे किसी सरकारी कॉलेज में पढ़ना नहीं चाहते थे क्योंकि इसमें उन्हें गुलामी की सड़ाँध अनुभव होती थी और इसी कारण स्काटिश चर्च कॉलेज तथा सेंट जेवियर्स कॉलेज जैसी उच्च कही जाने वाली शिक्षण संस्थाओं में भरती होना पसंद नहीं किया।

कहने को तो हीरालाल जी अपने कारोबार में लगे रहते, परंतु उनका अधिकांश समय कांग्रेस के कार्यों में ही व्यतीत होता था। राम मनोहर इतने होशियार हो गए थे कि पिताजी द्वारा भेजे गए पचास रुपये प्रतिमाह पर अपना गुजारा चलाते और उनको अपनी चिंताओं से मुक्त रखते थे। उस समय वे छात्रावास में ही रहते थे।

सन् १९२८ में कलकत्ता (कोलकाता) में कांग्रेस अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन के सभापति बने–मोतीलाल नेहरू। पं. मोतीलाल जी के स्वागत में भव्य तैयारियाँ की गईं। उन तैयारियों में लोहिया ने भी सक्रिय भूमिका निभाई। वहीं उनकी जवाहर लाल जी से भी पहली मुलाकात हुई। आगे चलकर यह मुलाकात घनिष्ठ मैत्री में बदली तथा बाद में यहाँ तक कि वे नेहरू जी के सबल विरोधी भी बन गए। उसी वर्ष लोहिया जी ने राजनीति में सक्रिय भाग लेना आरंभ किया। साइमन कमीशन जब भारत आया तो लोहिया ने अपने साथियों के साथ उसके बहिष्कार की योजना बनाई। यह सन् १९२८ की ही घटना है। विद्या सागर कॉलेज वैसे ही सरकारी कोप दृष्टि का शिकार बना हुआ था। इसके बावजूद भी लोहिया ने कमीशन के बहिष्कार का निर्णय लिया और 'साइमन वापस जाओ' का उद्घोष किया। इसका दुष्परिणाम भी उन्हें भोगना पड़ा। लोहिया से विश्वविद्यालय के अधिकारी रुष्ट हो गए क्योंकि उनके राजनीतिक विचार बड़े उग्रवादी थे। इस कारण पढ़ाई में अच्छे होने और परीक्षा के सभी पर्चे श्रेष्ठ ढंग से हल करने के बावजूद भी उनसे पक्षपात बरता गया। लोहिया ने देशभक्ति का पहला मूल्य चुकाया और यह कड़वा घूँट चुपचाप पी लिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बी. ए. पास करने के बाद अग्रवाल जातीय कोष के खरच पर वे आगे पढ़ने के लिए लंदन गए। इस पूरी यात्रा के बीच उनमें मानसिक द्वंद्व चलता रहा। एक पक्ष तो कहता था लंदन नहीं जाया जाए क्योंकि वहाँ की जनता हम भारतीयों को हीन दृष्टि से देखती थी। दूसरा पक्ष बर्लिन चलने की सलाह दे रहा था। इसी अनिश्चय की स्थिति में वे इंगलैंड पहुँचे परंतु वहाँ के वातावरण में रह पाना मुश्किल हो गया। अत: वे बीच में ही इंगलैंड प्रवास का विचार त्यागकर जर्मनी आ गए और बर्लिन विश्वविद्यालय में भरती हो गए। बर्लिन विश्वविद्यालय में पूरी लगन और निष्ठा के साथ वे पढ़े तथा साथ ही भारतीय राजनीति का, राजनीतिक सरगर्मियों का भी अध्ययन करते रहे। वहीं रहते हुए उन्होंने भारतीय विद्यार्थियों की एक संस्था 'मध्य यूरोप हिंदुस्तानी संघ' की स्थापना भी की। इस संस्था का उद्देश्य था भारतीय स्वतंत्रता का प्रचार तथा वहाँ के जनमत को भारतीय जनता की न्यायिक माँग के पक्ष में मोड़ना।

सन् १९३२ में उन्होंने 'नमक और सत्याग्रह' विषय पर अपना शोध प्रबंध लिखा और डॉक्टरेट की उपाधि ग्रहण की। सामयिक समस्याओं पर लिखा गया यह शोध प्रबंध अपने आप में अद्वितीय था। जर्मनी में अभी उनका और रहने का मन था परंतु कुछ शुभचिंतकों ने उन्हें परामर्श दिया कि हिटलरवाद की विजय होने वाली है और ऐसी स्थिति में तुम्हारा यहाँ रहना ठीक नहीं है। अपने शुभचिंतकों का परामर्श मानकर वे उसी वर्ष भारत के लिए रवाना हो गए। जर्मनी के बंदरगाह से जहाज पर सवार होकर वे मद्रास–भारत के बंदरगाह पर उतरे।

लोहिया जी को कलकत्ता पहुँचना था परंतु पास में अब एक पैसा भी नहीं बचा था। थोड़ी देर तक वे विचार करते रहे और फिर कुछ तय कर वे मद्रास के प्रसिद्ध अखबार 'हिंदू' के कार्यालय में पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने संपादक से संपर्क साधा और कहा– "मैं जर्मनी से आ रहा हूँ और आपके अखबार के लिए एक-दो लेख देना चाहता हूँ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'दीजिए'–संपादक ने कहा।

'लाइए कागज–कलम'–लोहिया ने कहा। सुनकर संपादक विस्मित हुआ। उसने पूछा–'ऐसा क्यों?'

'देखिए श्रीमान जी। मुझे कलकत्ता जाना है और कलकत्ता जाने के लिए पैसे चाहिए'–स्पष्टवादी लोहिया ने अपनी स्थिति साफ–साफ शब्दों में रख दी। संपादक भी उनकी स्पष्टवादिता से प्रभावित हुए। कागज–कलम प्राप्त कर लोहिया ने दो लेख तत्काल तैयार कर दिए और उनका पारिश्रमिक लेकर कलकत्ता का टिकट खरीदा व कलकत्ता रवाना हुए।

कलकत्ता पहुँच कर उन्हें काम–काज की तलाश हुई, लेकिन वे किसी सरकारी नौकरी में नहीं फँसना चाहते थे। इसीलिए वे मालवीयजी से मिले और अपनी स्थिति बताकर काशी विश्वविद्यालय में ही कोई स्थान दिला देने के लिए अनुनय करने लगे। मालवीय जी लोहिया से बड़े प्रभावित हुए पर वे यूनिवर्सिटी में कोई स्थान न दिला सके। हाँ उन्होंने रामेश्वर दास बिरला से कहकर लोहिया को उनका निजी सचिव बना दिया। लोहिया की पट्टी उनसे न बैठी और सप्ताह में वे नौकरी छोड़कर आ गए। परिस्थितिगत संयोगवश उन्हीं दिनों लोहिया की गांधी जी से मुलाकात हुई और उन्होंने महात्मा गांधी को अपने मार्गदर्शक के रूप में चुना।

सन् १९३४ में कांग्रेस संगठन की ओर से कांग्रेस सोशलिस्ट पत्र का प्रकाशन आरंभ हुआ। यह पत्र कलकत्ता से प्रकाशित किया गया था। लोहिया तब तक कलकत्ता की राजनीति में अपना अनूठा स्थान बना चुके थे और वे समाजवादी विचारधारा के प्रतीक भी समझे जाते थे। अत: उन्हें ही इस पत्र का संपादक नियुक्त किया गया। लोहिया जी इस काम में जी जान से लगे। कांग्रेस में समाजवादी शक्तियों का जोर दिनोदिन बढ़ता गया और लोहिया का व्यक्तित्व एक समाजवादी विचारक के रूप में उभरता गया। उनके संपादन में निकलने वाला कांग्रेस सोशलिस्ट पत्र भी काफी लोकप्रिय हुआ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छह वर्षों तक लोहिया देश में स्वतंत्रतावादी तथा समाजवादी जनचेतना जाग्रत करने के लिए विभिन्न मोर्चों पर सन्नद्ध रहे। महात्मा गांधी और नेहरू से भी उनके संबंध घनिष्ठ होते गए जो आत्मीयता की गहराइयों तक भी पहुँचे। लोहिया जी की गणना चोटी के नेताओं में की जाने लगी और वे थे कि यत्र-तत्र ज्वालामुखी बनकर धधकते रहे। अँगरेज सरकार यह कब सहन कर सकती थी? अत: उसने मई १९३९ में उन्हें गिरफ्तार कर लिया लेकिन तीन माह से अधिक वह इस शेर को अपने पिंजड़े में बंद न रख सकी। लोहिया ने अपने मुकदमे की पैरवी स्वयं की और कई पेशियों के बाद वे अगस्त में रिहा हुए। वे मुश्किल से साल भर भी बाहर न रह पाए थे कि जून १९४० में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इस बार उन्हें दो वर्ष सख्त कैद की सजा हुई और उन्हें बरेली भेज दिया गया। महात्मा गांधी ने अँगरेजी सरकार के इस फैसले को पक्षपातपूर्ण कहा।

सन् १९४२ में वे जब मुक्त हुए तो इलाहाबाद में हुए कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में भाग लिया। इस अधिवेशन में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पर चर्चा होनी थी। प्रस्ताव स्वयं गांधी जी ने तैयार किया था। किन्हीं कारणों से वे तो इस अवसर पर उपस्थित नहीं हो सके, परंतु उन्होंने प्रस्ताव मीरा बहन के हाथों भिजवाया था। इस प्रस्ताव पर बहस ने गरम रूप लिया। नेहरू जी ने ढुलमुल रुख अपनाया तो लोहिया ने खुलकर इसका विरोध किया। यहीं से नेहरू जी व लोहिया में मतभेद पैदा हुए। ८ अगस्त १९४२ को गांधी जी ने 'करो या मरो' का मंत्र दिया। पूर्व संध्या को ही बंबई (मुंबई) की एक सभा में भारत छोड़ो प्रस्ताव भी पूर्ण बहुमत से स्वीकार कर लिया गया। इस मंत्रोपदेश के साथ ही सारे भारत में एक हलचल पैदा हो गई। देश के प्रमुख नेता पकड़े जाने लगे लेकिन लोहिया भूमिगत रहकर भारत छोड़ो आंदोलन का संचालन करते रहे। लोहिया जी ने इन दिनों बंबई और कलकत्ता से दो गुप्त रेडियो स्टेशन भी चलाए जिसके नाम थे-'कांग्रेस-रेडियो'। इस रेडियो से लोहिया के ओजस्वी भाषण प्रसारित किए जाते। लोगों के लिए तब यह बड़े रहस्य का विषय बन गए थे। इस रेडियो का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुराग पुलिस को जल्द ही लग गया। अत: रेडियो स्टेशन को नष्ट-भ्रष्ट कर पुलिस लोहिया के पीछे पड़ गई। उसने लोहिया की गिरफ्तारी के लिए वारंट भी जारी कर दिया। पुलिस की सरगर्मियाँ बढ़ती देखकर लोहिया नेपाल चले गए। उस समय नेपाल में जय प्रकाश नारायण और अन्य कई साथी भी फरार जीवन व्यतीत कर रहे थे।

दुर्भाग्य से सन् १९४४ में लोहिया जी कलकत्ता में गिरफ्तार कर लिए गए और नारकीय यातनाओं के लिए बदनाम लाहौर के लिए भेज दिया गया।

८ जनवरी १९४९ को उन्हें स्वतंत्र भारत में जन सुरक्षा कानून के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया और मुकदमा चलाया। इस पर लोहिया को मुक्त कराने के लिए जन आंदोलन चला और बड़ी मुश्किल से सरकार उन्हें जुलाई में छोड़ने को राजी हुई। इसके साथ ही उनके जीवन का पूर्वार्द्ध समाप्त हुआ और उत्तरार्द्ध शुरू जिसमें वे स्वतंत्र भारत के पुनर्निर्माण में प्रजातंत्र के सजग प्रहरी के रूप में काम करते रहे।

सन् १९५४ में वे एक बार पुन: गिरफ्तार हुए-कारण था सविनय अवज्ञा आंदोलन। लेकिन न्यायालय ने उन्हें रिहा कर दिया। साथ ही लोहिया ने समाजवादी आंदोलन को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। उनकी मान्यता में समाजवाद-साम्यवाद से एक भिन्न ही प्रकार की व्यवस्था थी, जिसमें लोकतांत्रिक आधार पर समाज से शोषण का उन्मूलन किया जाना था और इसके लिए स्वतंत्रता परमावश्यक थी। स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व उनके समाजवाद के तीन प्रमुख आधार हैं, जिनमें एक बनाया गया है-दो बनाना अभी शेष है। उसके लिए लोहिया की आत्मा अपने देश के नागरिकों से जिसके लिए वे जिए और जिनकी मरते दम तक चिंता थी-उनके कर्त्तव्य का तकाजा करती है।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साहस के धनी—कन्हाईलाल दत्त

गोरे जेलर ने देखा कि जिस युवक को कल फाँसी दी जाने वाली है आज भी उसके चेहरे पर वही मनोहारी मुस्कान फूट रही है, उसी आत्मीयता के साथ वह उसका अभिवादन कर रहा है। जिस दिन से यह कैदी इस जेल में आया है, उसकी विचारणाओं में महान परिवर्तन आने लगा था। जब इस सुदर्शन युवक को फाँसी की सजा सुनाई गई तो उसके हर्ष का पारावार न रहा। लंबे बालों तथा चौड़े चेहरे वाले इस युवक को जेलर ने उस दिन पूछा था–"तुम इतने प्रसन्न क्यों हो?" उसने आशा की थी कि वह राष्ट्र पर अपने बलिदान के सौभाग्य पर प्रसन्न होगा, पर उस युवक ने इस आशा के विपरीत उत्तर दिया–"मैं अगले जन्म की तैयारी में व्यस्त हूँ और यही मेरी प्रसन्नता का कारण है।"

जिज्ञासा जगा दी। वह इससे भारतीय संस्कृति का ज्ञान पाने लगा। उसकी समझ में आ गया कि आत्मा जन्म-मरण से परे है। युवक अगले जन्म की तैयारी में लगा है। इन दोनों में परस्पर घनिष्ठता बढ़ती गई।

मृत्यु के एक दिन पहले भी उसकी पूर्ववत मुस्कान देखकर जेलर ने पूछा–"आज तो हँस रहे हो, कल तुम्हारे यही मुस्कराते ओंठ मृत्यु की कालिमा से काले पड़ जाएँगे।" युवक ने कहा कुछ नहीं उसी तरह मुस्कराता रहा। जेलर का हृदय इस जिंदादिल युवक के विछोह की कल्पना से भर आया। यह युवक थे–स्वतंत्रता की बलिवेदी पर बलिदान होने वाले प्रसिद्ध क्रांतिकारी कन्हाईलाल दत्त। जिन्हें अलीपुर कांड में फाँसी दी गई थी। जेल की कोठरी में भी इनका वजन १५ पौंड बढ़ गया था। फाँसी के बाद जेलर ने इनका चेहरा देखा। उस पर वही अमर मुस्कान बिखरी हुई थी। मृत्यु की कालिमा का कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चिह्न इस वीर के शरीर पर नहीं था। होता भी कैसे? उनके लिए तो मृत्यु आत्मा के वस्त्र परिवर्तन की प्रक्रिया थी।

कन्हाईलाल दत्त का जन्म कलकत्ता के निकट चंद्रनगर में सन् १८८७ में हुआ था। जन्माष्टमी के दिन जन्म लेने के कारण इनके माता-पिता ने इनका नाम कन्हाईलाल रख दिया। परिवार की स्थिति सामान्य थी। पिता इनके पढ़ाई का खरच नहीं जुटा पाते थे। पिता की इस विवशता को कन्हाई स्वयं जानते थे। उन्होंने पिता का भार नहीं बढ़ाया। अपने पाँवों पर खड़े होकर इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए. पास किया। ट्यूशन तथा छोटी-मोटी नौकरियाँ करके इन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। सच है जहाँ चाह है, वहाँ राह तो निकल ही आती है।

पढ़ाई पूरी करके ये स्वतंत्र व्यवसाय करने की सोच रहे थे। व्यवसाय के लिए धन चाहिए था जो इनके पास नहीं था। अँगरेजों की नौकरी ये करना नहीं चाहते थे। अंतःकरण से आवाज आई-''कन्हाई तू अपने पेट की चिंता कर रहा है और भारत के करोड़ों नागरिक दासता की चक्की में पिसे जा रहे हैं, तेरी यह जवानी किस दिन काम आएगी? इसे सफल बना, देश के लिए कुछ कर।'' इस आवाज को सुनकर उन्होंने स्वतंत्रता लाने का प्रयत्न आरंभ कर दिया।

क्रांतिकारियों से इनकी भेंट हुई। १९ वर्ष की अल्पायु में ही इन्होंने चंद्रनगर में देशभक्तों की एक शाखा स्थापित की। बम बनाने की कला सीखने के लिए आप मानितल्ला बाग के बम कारखाने में आने-जाने लगे। पुलिस तथा जासूसों को इस कारखाने का पता नहीं था। किसी देशद्रोही ने अपने थोड़े लाभ के लिए इस कारखाने की सूचना सरकार को देने की नीचता की। भेद खुल गया। इस स्थान पर छापा मारा गया जिसमें ३४ व्यक्ति गिरफ्तार हुए। कन्हाईलाल भी उनमें से एक थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जेल की चहारदीवारी में बंद होने पर भी न तो ये लोग निष्क्रिय बैठे रहे और न इनकी गिरफ्तारी पर क्रांति का काम रुका। इनका स्थान अन्य लोगों ने ले लिया। इस केस के सरकारी वकील की फरवरी १९०८ में क्रांतिकारियों ने हत्या कर दी। दिन-दहाड़े अदालत में डी. एस. पी. को खतम कर दिया। हत्या करना क्रांतिकारियों का उद्देश्य नहीं था। इस माध्यम से वे विदेशी शासकों को बता देना चाहते थे कि यह आग इन गिरफ्तारियों से बुझने वाली नहीं है और भी जोर से भड़केगी जिसमें यह साम्राज्य जलकर स्वाहा हो जाएगा।

इस क्रांति दल का एक कमजोर आदमी जो मृत्यु के भय से काँप गया तथा प्रलोभन में पड़कर सरकारी गवाह बन गया। यह व्यक्ति था-नरेन गोसांई। विदेशी शासक अपने साम्राज्य की रक्षा के लिए कुछ भी करते हैं, पर एक भारतीय का इस प्रकार का विश्वासघात असह्य था। इस एक की गद्दारी ने अन्य देशभक्तों की मान-मर्यादा तथा सदुद्देश्य को भी आँच पहुँचाई। कन्हाईलाल दत्त तथा सत्येंद्र ने इस देशद्रोही को सजा देने की ठान ली।

इनके उद्देश्य को जानकर अन्य बुजुर्ग क्रांतिकारियों ने इन युवकों का उत्साह बढ़ाने की बजाय इन्हें हतोत्साहित किया। किंतु ये दोनों अपने निश्चय पर अटल थे। अन्य लोगों का असहमत होना निराधार भी नहीं था। जेल में रहते हुए पिस्तौल पा लेना तथा नरेन के पास पहुँचना नितांत असंभव था। किंतु दृढ़ इच्छाशक्ति तथा बौद्धिक कौशल के बल पर इन दोनों ने इस असंभव को संभव बना दिया।

इनके पास रिवाल्वर कैसे पहुँचे, यह अभी तक रहस्य के परदों में छिपा है। किंतु यह सत्य है कि इन्होंने किसी प्रकार दो रिवाल्वर प्राप्त कर लिए। बहुत संभव है खाने के लिए जो मछली तथा कटहल आदि आते थे, उनमें छिपाकर यह इन तक पहुँचाई गई हो। रिवाल्वर मिल जाने पर आधी सफलता तो हाथ लग गई।

नरेन सरकारी गवाह हो जाने के कारण इन लोगों से दूर एक अस्पताल में रखा गया था। उस तक पहुँचना भी टेढ़ी खीर था। सत्येंद्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ने खाँसी का मरीज बनकर अस्पताल की शरण ली तथा कन्हाई ने पेट दरद का बहाना बनाकर। पहले सत्येंद्र पहुँचा, उसके कई दिनों बाद कन्हाईलाल। कन्हाई ने अस्पताल पहुँचते ही जोर-जोर से कराहना-चिल्लाना आरंभ किया। यह सत्येंद्र का अपने आगमन की सूचना देने का संकेत था।

दोनों ने बीमारी का अभिनय इस खूबी से किया कि किसी ने इन पर संदेह नहीं किया। सत्येंद्र ने अपने आप को जीवन से निराश प्रकट किया तथा मुखबिर बनने की इच्छा प्रकट की। नरेन से मिलने की इच्छा प्रकट करने पर नरेन तथा एक जेल का अफसर इनसे मिलने का लोभ संवरण न कर पाए। दोनों इनसे मिलने पहुँचे। नरेन को देखते ही सत्येंद्र ने रिवाल्वर से फायर किया पर गोली नरेन के पाँव में लगी। नरेन भाग खड़ा हुआ। अन्य मरीजों ने देखा कि दिन-रात खाट तोड़ने वाला पेट का मरीज शेर की तरह उछला व लपककर नरेन के पीछे भागा। यह देखते ही कन्हाईलाल ने सारी गोलियाँ इसी देशद्रोही पर समाप्त कर दीं। वह धराशायी हो गया।

यह समाचार बिजली की तरह सारे कलकत्ता में फैल गया। कन्हाईलाल के इस साहस पर नवयुवकों में उत्साह की एक लहर दौड़ पड़ी। वे भी कमर कसकर आंदोलन में भाग लेने को उठ खड़े हुए। जो अपने व्यक्तिगत स्वार्थ में ही लिपटे पड़े थे। इस कांड ने उन्हें झकझोरकर खड़ा कर दिया। भारतीय जनता में उत्साह का संचार हो गया। सुरेंद्रनाथ बनर्जी जैसे नेताओं ने यह समाचार सुनते ही मिठाई बाँटी।

अँगरेजी हुकूमत की यह बहुत बड़ी हार थी। उसकी जेल में रहने वाले क्रांतिकारी ऐसा काम कर जाएँ। उनके पिट्ठू को जेल अधिकारी के सामने गोलियों से छलनी कर दें। वह भी किसी छोटे-मोटे स्थान पर नहीं, कलकत्ता जैसे बड़े शहर में, जहाँ अँगरेजी साम्राज्य की नींव पड़ी थी। सत्ता के मुँह पर इससे बड़ा तमाचा और क्या हो सकता था?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धरती तो आज भी वही है। देशवासी भी बदले नहीं। पर आज वह कुरबानी, वह देशभक्ति, वह आदर्श एक सपना बनकर रह गया है। हर आदमी ने अपना पेट इतना बड़ा कर लिया है–अपना स्वार्थ ही सब कुछ मान लिया है। उसी संकुचित दृष्टिकोण को अपनाकर नीति-अनीति का भेद किए बिना अपना घर भरने की हीन वृत्ति से ग्रस्त होकर राष्ट्र के हित की बात सोच नहीं पाते। वह दिन दूर नहीं जब इस धरा पर फिर कन्हाईलाल उत्पन्न होंगे तथा स्वार्थ के पुतले नरेन को सबक सिखाकर ही छोड़ेंगे।

कन्हाईलाल के इस दुस्साहस पर विदेशी साम्राज्यवादी बौखला उठे। मुकदमे की रस्म अदायगी पूरी हुई। फाँसी से अधिक और क्या दे सकती थी यह हुकूमत! दोनों को फाँसी की सजा सुनाई गई। १०-११-१९०८ के दिन इन दोनों को फाँसी की सजा दे दी गई।

फाँसी के बाद शहीद का शव लेने के लिए उनके भाई तथा परिवार के अन्य व्यक्ति जेल पहुँचे। शोक से सभी की छाती फटी जा रही थी। बड़े भाई की रुलाई नहीं रुक पा रही थी। गोरे जेलर ने उनकी पीठ थपथपाते हुए कहा–"आप रोते क्यों हैं जिस देश में ऐसे वीर पैदा होते हैं, वह देश धन्य है। मरेंगे तो सभी, अमर होकर कौन आया है पर आपके भाई जैसे भाग्यवान कितने होते हैं?" उन्होंने विस्मय से देखा गोरा अधिकारी स्वयं रो रहा था। जैसे उसका अपना भाई दिवंगत हो गया हो। काँपते हाथों से शव के मुख पर से कंबल हटाया तो देखा कन्हाईलाल इन रोने वालों पर हँस रहे थे। एक अमर मुस्कान उनके ओंठों से फूट रही थी।

कौन कहता है कि यह शहीद गुलाम रहा था। जिसने एक पल भी विदेशी हुकूमत को नहीं माना। अपने क्षुद्र स्वार्थों का गुलाम वह बना नहीं। जेल की दीवार उसके संकल्प को बाँध नहीं पाई। फाँसी की सजा उसका चैन नहीं छीन पाई। मृत्यु के विकराल हाथ उसकी मुस्कान नहीं छीन पाए। जिसे अँगरेजी हुकूमत ने एक हत्यारा कहा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर देशवासियों ने उसे शहीद का गौरव प्रदान किया। शान से उसकी शवयात्रा निकाली गई। हजारों की संख्या में लोग एकत्रित हुए। पंच-भूत शरीर की राख को लोगों ने लूट लिया अपने मस्तक पर लगाने के लिए।

यह सम्मान, यह विजयश्री तथा यह श्रद्धा किसी-किसी को ही मिलती है। जो आदर्शों के पथ पर चलते हैं, वे ही यह सब पा सकते हैं। इस पर कुबेर का कोष व विश्व का साम्राज्य भी न्योछावर किया जा सकता है। कन्हाईलाल दत्त ने अपनी अंत:प्रेरणा की अनसुनी नहीं की, उठ खड़े हुए तो सफल हो गई उनकी जवानी। आज देश में कितने ही युवक बेकार फिरते हैं। क्या वे अपनी इस जवानी को समझ पाए? यदि समझ पाए होते तो आज देश की यह दशा नहीं होती। अनाचार और अनैतिकता इस प्रकार बढ़ी-चढ़ी न होती।

कन्हाईलाल दत्त अपनी भरी जवानी में अपने कर्त्तव्य-पथ पर चलते हुए शहीद हो गए। उनकी मुस्कान सदा यह कहती-बताती रही-"अन्याय चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो उसका प्रतिकार करने का साहस न करना अपने मानवीय कर्त्तव्यों की उपेक्षा करना है। अन्याय का अंधकार चाहे कितना ही सघन क्यों न हो एक आदर्शवादी व्यक्ति उसे मिटाने के लिए दीपक की तरह जले तो प्रकाश होकर ही रहेगा।" हमें आजादी मुफ्त में नहीं मिली। अनेकानेक देशभक्तों के रक्त से इस स्वतंत्रता का विनिमय हुआ। स्वतंत्र भारत की उन्होंने ऐसी कल्पना तो नहीं की थी जैसी आज हम देख रहे हैं। इन देशभक्तों के प्रति हमारे हृदय में तनिक भी श्रद्धा है-उसका जीवनवृत्त पढ़कर हमारे हृदय में तनिक भी हलचल होती है-आँखों में दो अश्रु छलक आते हैं तो अंत:करण की आवाज, आत्मा की पुकार को सुनकर श्रेय पथ पर चलना होगा। सर्वनाशी विभीषिकाओं से जूझने तथा नवसृजन के लिए हमें अपना जीवन नियोजित करना ही होगा।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राष्ट्र की स्वतंत्रता को समर्पित बारहट परिवार

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी आंदोलन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यह बात दूसरी है कि आजादी लाने का श्रेय उन्हें नहीं मिला। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि क्रांतिकारियों के बलिदान व्यर्थ गए अथवा राष्ट्र के प्रति उत्सर्ग की निष्ठा उनके असहयोग आंदोलन के सत्याग्रहियों से कम थी। विदेशी शासन या एक तंत्र से मुक्ति पाने का अब तक जो प्रचलित मार्ग था, वह सशस्त्र क्रांति का ही मार्ग था। भारत को स्वतंत्र कराने के लिए इस प्रचलित मार्ग का अनुसरण करके सैकड़ों युवकों ने अपनी समस्त व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं व सुख-सुविधाओं को त्यागकर देश के लिए बड़ी से बड़ी कुरबानी दी। यह बात दूसरी है कि उनका चिंतन महात्मा गांधी की तरह मौलिक और भारतीय जीवन दर्शन के साथ समग्र रूप से तादात्म्य करके चलने वाला नहीं था और न ही सारी की सारी जनता उनके पथ पर चल सकती थी। यही कारण था कि भारत की आजादी का श्रेय उन्हें नहीं मिल सका। किंतु उनकी राष्ट्रनिष्ठा और उत्कट देशभक्ति करोड़ों लोगों के दिलों में वह तूफान उत्पन्न करने में उतनी ही महत्त्वपूर्ण रही थी जितना कि गांधी जी का सत्याग्रह आंदोलन।

देखा जाए तो गांधी जी का अहिंसक आंदोलन उस समय इतिहास के गर्भ में ही था। उसकी सत्यता अभी संदिग्ध ही थी तो पारम्परिक मार्ग पर चलने वाले क्रांतिकारियों की महत्ता स्वीकारे बिना कोई मार्ग अहिंसावादियों के लिए भी उस समय नहीं हो सकता था। कोई व्यक्ति अपने देश के लिए अपने कितने सुख न्योछावर कर सकता है? यह क्रांतिकारियों के जीवन में स्पष्ट ही देखा जा सकता है जो अत्यधिक प्रेरक है। ऐसे ही एक विस्मृत क्रांतिवीर जोरावर सिंह बारहट तथा उनके परिवार के बारे में हम बताने जा रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बीसवीं शताब्दी की प्रथम दशाब्द में क्रांतिकारी भावना अत्यंत उग्र हो गई थी। गांधी जी का नाम तब तक भारत के क्षितिज पर उदित भी नहीं हुआ था। इसी भावना से प्रेरित होकर राजस्थान का एक बारहट परिवार इस क्रांति की लहर में बहकर अपना सर्वस्व दाँव पर लगा बैठा।

भाट, चारण अथवा बारहट मध्यकालीन सामंत युग की एक विशिष्ट जाति थी जिसका काम काव्य रचना करना और युद्ध के समय अपनी ओजपूर्ण कविता से वीरों का उत्साहवर्द्धन करना था। कवि चंदवरदाई इसी वंश में हुए थे। केसरी सिंह बारहट की रगों में उसी वंश का रक्त बह रहा था। भावनाओं का ज्वार भी कुछ कम नहीं था। केसरी सिंह बारहट की उदयपुर व कोटा राज्य में बड़ी प्रतिष्ठा थी तो उनके अनुज जोरावर सिंह को जोधपुर नरेश बहुत मानते थे। इनको बड़ी-बड़ी जागीरें मिली हुई थीं। शाहपुरा में जोरावर सिंह की हवेली और जागीर थी। जोधपुर महाराजा ने उनकी योग्यता से प्रभावित होकर उन्हें महारानी के महलों का प्रबंधक नियुक्त किया था।

अकबर और औरंगजेब के दाँत खट्टे करने और स्वाधीनता के ध्वज को उठाए रखने वाले वीरों के वंशज देशी राजाओं को तो विलासिता ने अकर्मण्य बना दिया था, पर उनको वीर बनाने वाले इन वीरों का हृदय अभी वीरत्व की भावनाओं से रिक्त नहीं हुआ था। केसरी सिंह बारहट को जब यह पता चला कि रास बिहारी बोस नामक क्रांतिकारी भारत में सशस्त्र क्रांति की योजना बनाकर उसे कार्य रूप में परिणत करने जा रहे हैं तो उन्होंने अपने पुत्र प्रताप सिंह व अनुज जोरावर सिंह व जामाता ईश्वर दास असिया को उनके पास भेजा।

ये लोग रास बिहारी बोस के दाहिने हाथ मास्टर अमीर चंद से मिले। मास्टर अमीर चंद ने दिल्ली को अपना केंद्र बनाकर राजनीतिक व सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण काम किया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाद में उन्हें वाइसराय लार्ड हार्डिंग्ज पर बम फेंकने के अपराध में तीन अन्य साथियों के साथ फाँसी पर लटका दिया गया।

इन तीनों युवकों का परिचय जब रास बिहारी बोस से कराया गया था तो उन्होंने कहा था–''देशभर में ठाकुर केसरी सिंह बारहट ऐसे क्रांतिकारी देशभक्त हैं जिन्होंने अपने को ही नहीं अपने भाई, पुत्र व जामाता को भी मातृभूमि की बलिवेदी पर आहुति देने के लिए भेजा है।''

केसरी सिंह बारहट रास बिहारी बोस के अनन्य सहयोगी थे। उनके पिताजी ने प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा को उदयपुर नरेश महाराणा सज्जन सिंह से कहकर मेवाड़ का प्रधानमंत्री नियुक्त कराया था। स्पष्ट था कि क्रांति और देशप्रेम की भावनाएँ केसरी सिंह व जोरावर सिंह को पैतृक विरासत में मिली थीं।

जोरावर सिंह व प्रताप सिंह ने २३ दिसंबर, १९१२ को अँगरेजी राज्य की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली के उद्घाटन रूप में बड़ी शान से लाखों रुपया खरच करके जो वाइसराय की सवारी निकाली गई थी, उस पर बम फेंकने के कार्य में भाग लिया था।

अँगरेज सरकार इस शानदार जलसे के रूप में भारतवासियों पर अपनी शक्ति का रोब डालना चाहती थी। इसके लिए बड़ी तैयारियाँ की गई थीं। भारत भर के राजे-महाराजे ही नहीं, विदेशी प्रतिनिधि भी वाइसराय की शोभायात्रा में सम्मिलित किए गए थे। क्रांतिकारी अपनी योजना द्वारा इस रोब-दाब की धज्जियाँ उड़ाने के लिए तैयारियाँ कर चुके थे। सरकार जितनी शान से इस शोभायात्रा को निकाल सकती थी, निकाली गई। पर ज्यों ही गंगा जमुनी सोने-चाँदी के होदे पर हाथी पर बैठे वाइसराय की सवारी चाँदनी चौक में पहुँची एक भयंकर विस्फोट के साथ ही जलूस में भगदड़ मच गई। क्रांतिकारियों ने वाइसराय पर बम फेंका था। इस बम विस्फोट से वाइसराय घायल हो गया तथा उसका ए. डी. सी. मारा गया। रंग में बुरी तरह भंग हो गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रोब जमाना तो सरकार ने चाहा था, पर जम गया विप्लवियों की वीरता और दिलेरी का।

पुलिस ने क्रांतिकारियों को पकड़ने में पर्याप्त तेजी बरती, पर उस समय कोई पकड़ा न जा सका। जोरावर सिंह व प्रताप सिंह मास्टर अमीरचंद्र से क्रांति संबंधी शिक्षण प्राप्त करके राजस्थान चले गए। वहाँ क्रांति की आग सुलगाना उनका काम था। उन्होंने कुछ देशभक्त ठाकुरों को इसके लिए तैयार भी कर लिया था।

वाइसराय पर बम फेंकने के सिलसिले में उन्हें पुनः दिल्ली बुलाया गया था। विस्फोट के बाद वे कई दिनों तक दिल्ली में ही छिपे रहे। फिर पैदल ही राजस्थान के लिए रवाना हुए, क्योंकि रेलों आदि साधनों पर पुलिस व गुप्तचर विभाग की कड़ी निगरानी थी। जमुना उन्हें तैरकर पार करनी पड़ी। दूसरे किनारे पर पहुँचने पर संदेह में दो पुलिस मैन इनके पीछे पड़ गए। यहाँ जोरावर सिंह को अपने हाथ बताने पड़े। अपनी तलवार से उन दोनों को यमलोक पहुँचा दिया।

हार्डिंग्ज बम कांड सरकार ने बड़ी गंभीरतापूर्वक लिया। धड़ाधड़ गिरफ्तारियाँ हुईं। रास बिहारी बोस व जोरावर सिंह बारहट को छोड़कर शेष सभी क्रांतिकारी गिरफ्तार कर लिए गए। रास बिहारी जापान चले गए। वहीं उन्होंने 'आजाद हिंद सेना' का गठन किया। प्रताप सिंह बारहट को अँगरेजी सरकार ने बरेली जेल में इतनी अमानुषिक यंत्रणाएँ दी कि उसका प्राणांत हो गया। केसरी सिंह बारहट को आरा षड्यंत्र केस में बीस वर्ष की सजा दी गई। प्रताप सिंह को अनेकानेक प्रलोभन दिए गए कि वह षड्यंत्र का सारा भेद बता दे तो उसके पिता को जेल से मुक्त कर दिया जाएगा। उनकी जागीर भी लौटा दी जाएगी तथा चाचा पर से वारंट हटा दिया जाएगा। पर वीर प्रताप सिंह ने मरना स्वीकार कर लिया, राष्ट्र के साथ गद्दारी नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जोरावर सिंह और उनके भाई की जागीर जब्त कर ली गई थी। उन्होंने अपने जीवन का ध्येय घर-घर जाकर क्रांति का अलख जगाना तथा अँगरेज सरकार की आँखों में धूल झोंकते रहना बना लिया। वे जब तक जीवित रहे सरकार उन्हें पकड़ नहीं सकी।

एक बार उदयपुर के रेजीडेंट ने इन्हें पकड़ भी लिया पर उनके व्यवहार से उसके संदेह की तनिक सी पुष्टि नहीं हुई। रेजीडेंट ने देशी रियासतों के कई जिम्मेदार भारतीय अफसरों से उनकी शिनाख्त करवाई। वे लोग इस देशभक्त से इतने प्रभावित थे कि वे भी सही बात नहीं कह सके। उन्हें छोड़ दिया गया।

जोरावर सिंह बारहट का मित्रों से कहना है कि वाइसराय पर बम उन्हीं ने फेंका था। क्रांतिकारियों के कार्य इतने गुप्त होते थे कि इस सत्य का पता नहीं चल सका। सरकार ने बसंत विश्वास को बम फेंकने का अपराधी माना है। संभवत: उसने जोरावर सिंह को बचाने के लिए ऐसा कहा हो। कुछ भी हो जो त्याग और बलिदान उन्होंने देश के लिए किया था वह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

जोरावर सिंह ने संन्यासी के रूप में अपना फरारी जीवन ही नहीं काटा, वरन एक सच्चे संन्यासी की तरह उन्होंने गाँव-गाँव जाकर धर्म का प्रचार किया तथा लोगों में देशभक्ति की भावनाएँ उत्पन्न कीं। फरारी का जीवन कितना कष्टपूर्ण और अनिश्चितता का जीवन होता है यह तो कोई भुक्तभोगी ही जान सकता है। यह जीवन जोरावर सिंह ने स्वेच्छा से वरण किया था। अपने सुख-सुविधा युक्त जीवन को देश की स्वतंत्रता के लिए तिनके की तरह त्यागने वाला उनका यह व्यक्तित्व हमारे युवकों के लिए आज भी प्रेरणा का स्रोत बन सकता है। बारहट परिवार का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जो महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है, उसने उसके नाम को अमर कर दिया है।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सोते कुमायूँ को जगाने वाला शेर बद्रीदत्त वैष्णव

देशभर में स्वतंत्रता पाने के लिए जन आंदोलन और क्रांतिकारी गतिविधियाँ चल रही थीं, पर बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के आरंभ तक कुमायूँ का पर्वतीय अंचल इस हवा से अछूता ही था। इस क्षेत्र के भोले-भाले पर्वत-पुत्रों को अपने जीवन की सामान्य आवश्यकताओं से ध्यान हटाकर देश व समाज के लिए कुछ करने की सुध नहीं थी। समय की हवा से अछूते इस क्षेत्र में क्रांति, असहयोग व समाज-सुधार की ज्वाला सुलगाने का श्रेय श्री बद्रीदत्त वैष्णव को जाता है जो सन् १९२१ के असहयोग आंदोलन में कुमायूँ क्षेत्र के एक मात्र मिलटरी पेंशनर थे।

अल्मोड़ा से बाईस मील दूर, गाँव तोला के एक धर्मभीरु ब्राह्मण परिवार में सन् १८७९ में जन्मे बद्रीदत्त वैष्णव को अपने पिता नारायणदास वैष्णव के हाथों अंधविश्वास और धर्मभीरुता का जो दुर्वह दंड भोगना पड़ा इसकी कहानी बड़ी दु:खपूर्ण है। संत तुलसीदास की तरह उन्हें भी परित्यक्त बालक का जीवन जीना पड़ा था।

ग्राम के जाने-माने ज्योतिषी जिनके लिए अपने पोथी-पत्रे एक तरह से खेत-खलिहान थे और अपने ज्योतिष संबंधी मनगढ़ंत दाँव-पेच उसमें उगने वाली फसल ने कुछ ग्रह आदि के लालच से अश्लेषा नक्षत्रोत्पन्न बालक बद्रीदत्त के माता-पिता को बताया कि ऐसे समय में पैदा होने वाला बालक माता-पिता की मृत्यु का कारण बनता है।

नारायण दास के दो पुत्र पहले ही जीवित थे सो वंश न चलने या बालक के प्रति विशेष मोह-माया होने का प्रश्न ही नहीं था और आगे भी संतान होने की संभावना भी समाप्त नहीं हुई थी। अत: उन्होंने इस तथाकथित अनिष्टकारी पुत्र का त्याग कर देना ही ठीक समझा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने अपने पुत्र को थोड़े से धन के बदले एक पुरोहित को बेच दिया।

इस अंधविश्वास को कहाँ तक रोया जाए? इसने जितना अनिष्ट इस हिंदू समाज का किया है, उतना तो विदेशी-विधर्मी आक्रमणकारियों ने भी नहीं किया। हिंदू समाज के लिए ही नहीं अंधविश्वास तो हर धर्मावलंबियों के लिए घातक सिद्ध हुआ है और हो रहा है। पुत्र अश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ हो या धनिष्ठा में, इससे कोई अधिक अंतर पड़ने वाला नहीं है। भला नक्षत्रों को किसी मनुष्य से क्या दुश्मनी हो सकती है और पृथ्वी से करोड़ों प्रकाश वर्ष दूर स्थित रहकर वे किसी पृथ्वीवासी का क्या अनिष्ट कर सकते हैं? किंतु जो लोग अंधविश्वास के पीछे बैठे-बैठे खाना चाहते हैं, वे भला कब मानते हैं? उनकी मक्कारी का फल इस बालक को भोगना पड़ा।

पुरोहित के घर बेच दिए जाने पर भी बालक बद्रीदत्त के दुर्भाग्य ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। उनको अपने पास रखने के बाद ही पुरोहिताइन ने एक पुत्र को जन्म दे दिया। संतान न होने के कारण पुरोहित ने पराये बालक को अपनाया था, पर अब अपना स्वयं का पुत्र हो जाने के बाद उन्हें पराये बालक को अपने पास रखने की आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई और उन्हें पुनः पिता को सौंप दिया गया।

माता-पिता और संतान के बीच अंधविश्वास ने जो लक्ष्मण रेखा खींच दी थी उसे उनके माता-पिता कभी लाँघ नहीं पाए। उन्हें न माँ का स्नेह मिला न पिता का दुलार। यों ही उपेक्षा सहते हुए वे बड़े हुए। उन्हें पढ़ने के लिए स्कूल नहीं भेजा गया।

पग-पग पर उपेक्षा व तिरस्कार पाने के कारण बालक बद्रीदत्त का आत्मसम्मान कराह उठा। उसने अपनी आंतरिक चेतना से प्रेरणा पाकर एक दिन घर छोड़ दिया। कुछ नेपाली तीर्थयात्री काशी जा रहे थे। बालक ने सुन रखा था कि काशी शिक्षा व ज्ञान का केंद्र है। अतः उन्होंने वहीं जाकर पढ़-लिखकर विद्वान बनने का निश्चय कर लिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने सोचा था कि कुछ योग्यता प्राप्त कर लेने के बाद उन्हें माता-पिता का प्यार मिल जाएगा। यदि नहीं भी मिले तो वे अपना जीवन तो बना सकेंगे। जिस बालक को सहयोग नहीं मिला पर जिसने अपनी सहायता स्वयं करने का निश्चय कर लिया उसका बनना सुनिश्चित सा हो जाता है। किंतु इस ढंग का साहस थोड़े से ही व्यक्ति दिखाते हैं बाकी अधिकांश तो कुंठित होकर रह जाते हैं।

बचपन में उन्होंने जो तिरस्कार व कष्ट-कठिनाइयाँ सही थीं उससे वे कष्टसहिष्णु हो गए थे तथा स्वयं अपनी राह बनाने की क्षमता पा गए थे। काशी में उन्होंने चार-पाँच वर्ष तक संस्कृत का अध्ययन किया जिससे उनका ज्ञान बढ़ा और जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाने में सहायता मिली।

वाराणसी में जब प्लेग का प्रकोप हुआ तो वह अपने कुछ नेपाली सहपाठियों के काफिले के साथ अपने गाँव लौट आए। उन्होंने सोचा था चार-पाँच वर्ष के वियोग से माता-पिता के हृदय में सोया वात्सल्य जाग पड़ेगा तथा अपने शिक्षित और स्वस्थ पुत्र को देखकर वे हर्षित हो उठेंगे। किंतु उनकी आशा के विपरीत उनके पिता ने अपने मरियल पुत्र को हृष्ट-पुष्ट दशा में लौटा देखकर उसे मूर्तियाँ चुराने वाले गिरोह का सदस्य समझ लिया तथा और भी उपेक्षा का व्यवहार किया। बद्रीदत्त के स्वाभिमान पर यह एक और चोट थी। वे इस चोट से तिलमिला उठे।

उस बालक के मन में उस समाज के प्रति कितना आक्रोश उपजा होगा, जिसे उसके माता-पिता ने एक ज्योतिषी की बेसिरपैर की बातों पर विश्वास करके एक पुरोहित के हाथ बेच दिया हो, पुरोहित ने भी उसे तभी तक अपनाया हो जब तक उसके कोई पुत्र उत्पन्न न हो गया हो, ऐसे स्वार्थी समाज के प्रति उसके मन में आक्रोश होना अस्वाभाविक नहीं होता किंतु आश्चर्य की बात तो यह है कि उसी व्यक्ति ने अपने चार छोटे भाइयों को अपने खरचे से पढ़ा-लिखाकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काम-धंधे से लगाया। आगे चलकर उसने उसी समाज के हित के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी, जिसे उसने पग-पग पर दुत्कारा था। उस समाज से उसने घृणा नहीं की वरन उसमें फैली उन कुरीतियों, अंधविश्वासों और विकृतियों से जूझना आरंभ किया जो उन्हें दु:ख देने का कारण बनी थी।

इसका कारण उनका स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे क्रांतिकारी, धर्म सुधारक, समाज सुधारक से साक्षात्कार होना व उनके उपदेशों से प्रभावित होना था। स्वामी जी जब वेदोक्त सिद्धांतों का प्रचार करने वहाँ पधारे, तब उन्होंने अपने मन की बात स्वामी जी को बताई। संक्षेप में परिवार और समाज द्वारा मिले तिरस्कार का वर्णन भी उन्होंने किया। इस पर स्वामी जी ने उन्हें बताया कि जो कुछ तुम्हें समाज ने प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में अनुदान दिया है, वह हिमालय है, उसकी तुलना में यह तिरस्कार राई सदृश भी नहीं है। अत: उन अनुदानों को देखो जो तुम्हें मिले हैं। तिरस्कार को देखोगे तो तुम अपना भी अहित करोगे और समाज का भी। समाज के अनुदानों को पहले चुका लो। स्वामी जी के इस प्रकार के निर्देश ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी।

वे बचपन में माता-पिता की रुखाई से त्रस्त हो आक्रोश में भरकर ब्रिटिश सेना में भरती हो गए थे। जब वे सेना में भरती हुए उन दिनों कुमायूँनी ब्राह्मणों की भरती बंद थी तो वे वीर सिंह के छद्म क्षत्रिय नाम से सेना में भरती हो गए।

सैनिक जीवन में उन्हें रंगून, मांडले, लास्यो, छिदविन तथा मौलिन आदि छावनियों में रहना पड़ा था। वे अपनी सूझ-बूझ एवं कर्त्तव्यपरायणता के कारण सामान्य सिपाही से फर्स्ट ग्रेड सिगनलर पद तक पहुँच गए।

स्वामी दयानंद के संपर्क में आने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि वे अब तक केवल पशु धर्म ही पाल रहे थे, अपने ही लिए जी रहे थे, जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य जैसे प्राणी की गरिमा के लिए उपयुक्त नहीं है। उन्हें मानव धर्म पालना चाहिए, अपने लिए ही नहीं समाज के लिए जीना चाहिए। अपने सुख का ही नहीं समाज के सुख का भी ख्याल रखना चाहिए।

इसी दृष्टि को पाकर वे छुट्टियों में घर आए और अपने दो छोटे भाइयों को अपने साथ वर्मा ले गए। उन्हें पढ़ा-लिखाकर काम पर लगा दिया। वे स्वामी दयानंद के सुधारवादी आंदोलन से बहुत प्रभावित हुए थे। यदि इस प्रकार धार्मिक व सामाजिक रूढ़ियों तथा अंधविश्वास को समाप्त किया जा सके तो पीछे आने वाली पीढ़ियों को उनका शिकार न होना पड़े। यह सोचकर वे स्वामी जी के बताए अनुसार समाज-सुधार की प्रवृत्तियों का प्रचार-प्रसार करने लगे। सेना की नौकरी करते हुए आंशिक रूप से बाद में पूर्णकालिक रूप से वे इस कार्य में लगे रहे।

सेना की नौकरी से मुक्त होते ही उन्होंने धार्मिक पाखंड और अंधविश्वास को मिटाने, सामाजिक कुरीतियों का कचरा जनमानस के मस्तिष्क से बुहारने के लिए अपने गाँव आ गए और धोली में मकान बनाकर रहने लगे। यहीं से उनका ध्येय समर्पित जीवन आरंभ हुआ। वे गाँव-गाँव जाकर स्वामी जी के बताए हुए सिद्धांतों का प्रचार करने लगे। उन्होंने अछूतों और महिलाओं के साथ किए जाने वाले अन्याय का खुलकर विरोध किया। उनके इस प्रचार से अंधविश्वासी जनता व पाखंडी लोग नाराज हुए, किंतु विवेकशील और नवयुवक उनका साथ देने लगे। इस प्रकार उनका सुधार कार्य चल निकला। ग्राम-ग्राम में एक विचार से प्रेरित होकर लोग शिक्षा व ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने लगे। इस कार्य में श्री वैष्णव की भूमिका नायक जैसी रही।

सामाजिक कुरीतियों से जनता को मुक्त कराने के साथ-साथ उन्होंने अँगरेजी शासन का भी विरोध किया, क्योंकि बिना राजनीतिक स्वतंत्रता पाए राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव नहीं था। स्वयं उनके मार्गदर्शक स्वामी दयानंद स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्याग्रह और क्रांतिकारी आंदोलन की चिनगारियाँ उन दिनों देश में यत्र-तत्र फूट रही थीं। वैसी ही एक चिनगारी उन्होंने अपने क्षेत्र में भी पैदा की। अँगरेजों द्वारा प्रदेश की जनता पर लादी गई 'कुली प्रथा' से मुक्ति पाने के लिए उन्होंने प्रबल जन आंदोलन छेड़ा। लोग कहते हैं कि फौज का सिपाही व ताँगे का घोड़ा दूसरा कोई काम नहीं कर सकते, पर उन्होंने इस उक्ति को निराधार सिद्ध कर दिखाया। उन्होंने जनहित का बहुत बड़ा काम किया।

जन आंदोलन प्रायः उसी स्थिति में गति पकड़ते हैं जब उसके द्वारा ज़नता की किसी समस्या का समाधान होता हो। ग्रामीण और राजनीतिक चेतना रहित क्षेत्र में विशुद्ध रूप से देश की स्वतंत्रता को लेकर एकदम कोई आंदोलन सफलतापूर्वक चलना संभव नहीं होता है। इस बात को बद्रीदत्त वैष्णव भलीभाँति जानते थे। अतः उन्होंने आंदोलन का प्रारंभिक चरण ऐसा रखा जिसमें हर व्यक्ति सम्मिलित हो सके, सहयोग दे सके।

उनके द्वारा संचालित इस आंदोलन को देखकर अँगरेज पदाधिकारी बौखला उठे। उन्होंने श्री वैष्णव पर राजद्रोह का आरोप लगाकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया। वे सन् १९२१ में पहली बार इस आंदोलन के सिलसिले में गिरफ्तार किए गए थे। अल्मोड़ा की जिला अदालत में उन पर मुकदमा चलाया गया। उनके भाई मोतीराम भी इस आंदोलन में उनके साथ थे। दोनों भाइयों को एक-एक वर्ष के सश्रम कारावास की सजा दी गई।

उन्हें बरेली तथा फरीदाबाद जेल में रखा गया। उनके साथ प्रसिद्ध सत्याग्रही पं. बद्रीदत्त पांडे भी रहे थे। उन्होंने अपनी पुस्तक में वैष्णव जी की वीरता व साहस की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है।

शरीर तो पहले ही वृद्ध और जर्जर हो चुका था। जेल की कठोर यंत्रणा ने उसे और भी नकारा कर दिया, पर उनकी उमंगें अभी भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नवयुवकों सी थी। जेल से बाहर निकलकर वे पुनः जनजागरण में लग गए ताकि देश को शीघ्र विदेशी शासन से मुक्ति मिल सके। स्वतंत्रता और समाज-सुधार के क्षेत्र में उन्होंने अपनी आयु को देखते हुए जो कार्य किया है वह वृद्धों के लिए सीख और युवकों के लिए चुनौती जैसा है।

उन्होंने अकेले ही इस आंदोलन में भाग नहीं लिया था। वे स्वयं ही देशभक्त नहीं बने थे, वरन अपने परिवार के सदस्यों को भी उन चिह्नों पर चलाना अपना गौरव समझा था। उनके पुत्र भी कर्मक्षेत्र में आ कूदे थे। सन् १९४० के सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के लिए उन्होंने अपना नाम महात्मा जी के पास भेजा, पर उनके स्वास्थ्य और आयु को देखते हुए उन्हें आज्ञा नहीं मिली। आज्ञा मिली उनके पुत्र विद्याधर वैष्णव को। विद्याधर वैष्णव ने अपने पिता के स्थान पर 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भी भाग लिया। श्री विद्याधर को इस आंदोलन में भाग लेने के कारण पाँच वर्ष का कारावास भोगना पड़ा तथा उनके परिवार की सारी संपत्ति कुर्क करके नीलाम कर दी गई। इस प्रकार पं. बद्रीदत्त वैष्णव ने अपनी मातृभूमि के लिए सर्वस्व समर्पित कर दिया।

पुत्र जेल काट रहा था और वृद्ध अशक्त पिता जाने किस शक्ति के सहारे घर-घर जाकर आजादी का अलख जगा रहा था। उन बूढ़ी हड्डियों में जाने कहाँ से इतनी ताकत आ गई थी कि वे घर-घर, गाँव-गाँव जाकर लोगों को स्वतंत्रताप्राप्ति के लिए विदेशी हुकूमत से टकरा जाने का आह्वान कर रहे थे। अँगरेज सरकार ने उन्हें बंदी बनाना चाहा पर उनके वृद्ध शरीर और जर्जर स्वास्थ्य को देखते हुए पकड़ कर छोड़ दिया गया। गांधी जी की विदेशी शिष्या सरलाबेन ने उन्हें कौनसी व चनोदा के पास रखे गए सत्याग्रही परिवारों की देख-रेख का भार सौंप दिया।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूफी अंबाप्रसाद
जो राष्ट्रहित में बलिदान हो गए

''सूफी साहब चलिए आपका समय हो गया।'' जेलर ने मृत्यु दंड देने के लिए बंदी को पुकारा कोठरी खोली। बंदी पद्मासन लगाए बैठा था नीरव, निस्पंद, निष्प्राण। शरीर को वस्त्रों की तरह त्याग देने वाले ये जीवंत आत्मा थे–देशभक्त सूफी अंबाप्रसाद। भारत में इनका रहना कठिन हो गया था। इनके यहाँ रहने से इन्हें प्राणदंड से कम सजा अँगरेज देने वाले नहीं थे। इनके मित्रों ने इनसे विदेश जाने का आग्रह किया। ये ईरान चले गए। प्रथम विश्वयुद्ध में वे ईरान की तरफ से लड़े। अँगरेजों ने इन्हें पकड़ लिया। सैनिक न्यायालय ने इन्हें गोली मारने की सजा सुनाई। सूफी साहब उनके गोली मारने से पहले ही अपना नश्वर शरीर छोड़ गए।

पानी की धारा के साथ तो जड़-तिनका भी बह लेता है किंतु प्रवाह के विपरीत तैरने का साहस मछली हीं कर सकती है। समय के साथ चलने वाले तो बहुत होते हैं, पर समय को बदलने का प्रयास जीवित-जाग्रत आत्माएँ ही कर पाती हैं। जिनकी आत्मा सोई हुई है, उस पर अज्ञान का आवरण पड़ा हुआ है, वे विवेकहीन मनुष्य पशुतुल्य जीवन ही जीते रहते हैं। सूफी अंबाप्रसाद समय की धारा को पलटने वाले जीवित-जाग्रत आत्माओं की कोटि में गिने जाते हैं।

भारतवर्ष अँगरेजी दासता की चक्की में पिसा जा रहा था। साधारण जनता को जमींदार लूटते थे और अँगरेज भी लूटते थे। इस दोहरी मार से भारतवासी बुरी तरह तड़प रहे थे। सामान्य जनजीवन नारकीय हो चला था। सूफी अंबाप्रसाद को यह स्थिति सह्य नहीं हो सकी। इस अन्याय से देशवासियों को छुड़ाने के लिए उनकी आत्मा तड़प उठी। ऐसे अनेकों जीवित-जाग्रत आत्माओं का पुण्य प्रताप है कि आज भारतवर्ष की जनता आजादी की साँस ले सकी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इनका जन्म मुरादाबाद में सन् १८६२ में हुआ। ये पैदा हुए तब भी इनके एक ही हाथ था। इस एक बाएँ हाथ से ही उन्होंने आगे चलकर जो जौहर दिखाए उन्हें देखकर दो हाथ वाले भी दाँतों तले उँगली दबाते थे। 'जैम उल इल्म' उर्दू पत्र के संपादक के रूप में वे एक नक्षत्र की तरह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के आकाश में उदित हुए। वे एक अच्छे लेखक थे। उनकी लेखनी तलवार की मार करती थी।

उन्होंने देखा कि मेरे देशवासी किस प्रकार अत्याचारों से पीड़ित हैं। अँगरेज हम पर शासन ही नहीं करते हमें नीचा समझते हैं। विद्वत्ता तथा योग्यता संपन्न भारतीय की भी अँगरेजों की तुलना में कोई कद्र नहीं होती। सड़क पर चलने, रेल में बैठने जैसे सामान्य नागरिक अधिकार तक में असमानता बरती जाती है। भारतवासी इतना सहते हुए भी चुप हैं, जागते नहीं, प्रतिकार के लिए उठ खड़े नहीं होते। उन्हें जगाने का माध्यम उन्होंने पत्रकारिता चुना।

पत्रकारिता का क्षेत्र उन दिनों आज की तरह पैसा कमाने का साधन नहीं था। न तो विज्ञापन की मोटी-मोटी रकमें उन दिनों प्राप्त होती थीं न सरकार से संरक्षण ही मिलता था। सरकार तो ऐसे पत्रों की जानी दुश्मन थी जो भारतवासियों में देशप्रेम जगाते थे। इस प्रकार के पत्र-पत्रिकाओं का अभाव ही था। इस प्रकार के गिने-चुने पत्रकार थे, जिनकी आर्थिक स्थिति बड़ी कमजोर थी। वस्तुतः यह एक परमार्थपरक कार्य था जिसमें हानि उठाने की ही संभावना थी, लाभ का तो सवाल ही नहीं उठता था। अंबाप्रसाद जी ने इसी काम को अपनाया।

इनकी लेखनी क्या चलती थी तलवार चलती थी। विदेशी शासन तथा जमीदारों पर इसकी मार बहुत भयानक होती थी। इस प्रकार के खतरनाक पत्रकार को सरकार कैसे खुला छोड़ सकती थी? 'जैम उल इल्म' में प्रकाशित एक लेख के आधार पर इन पर सरकार ने राजद्रोह का अभियोग लगाया। न्यायालय ने डेढ़ वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सजा की अवधि समाप्त हुई तो रजवाड़ों ने इनके ऊपर अनुचित हस्तक्षेप करने का मुकदमा किया। विदेशी सरकार तो यही चाहती थी कि सूफी जेल में ही सड़ता रहे। इस अभियोग से इन्हें छह वर्ष का सश्रम कारावास दिया गया। सूफी तो यह सब सहने को तैयार होकर ही मैदान में कूदे थे। वे जानते थे कि सत्य कहने वाले को यातनाएँ तो मिलेंगी ही। ईसा को भी ऐसी ही सच्ची बात कहने के कारण सूली पर चढ़ना पड़ा था, पर उनका यह बलिदान निरर्थक नहीं गया। मेरी यातनाएँ भी निरर्थक नहीं जाएँगी। इनका परिणाम शुरू होगा। भारतवर्ष को स्वाधीनता दिलाने में ऐसे कितने ही बलिदान देने पड़ेंगे, जेल तो साधारण बात है।

हैदराबाद का निजाम इनकी विद्वत्ता का कायल था। जब इनकी सजा पूरी हो गई तो उनसे उसने अपने यहाँ रह जाने का आग्रह किया। निजाम ने उन्हें दो रुपये प्रति माह देने का प्रस्ताव किया। उसने तो इनके रहने के लिए मकान तक बनवा दिया था। सूफी इस प्रकार का जीवन नहीं चाहते थे। आत्मा का हनन करके शारीरिक सुख-सुविधा के लिए अपने आप को पतित कर लेना उन्हें स्वीकार नहीं था। उन्होंने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। अँगरेज सरकार इन्हें एक हजार रुपये मासिक वेतन पर अपने जासूसी विभाग में रखना चाहती थी। सरकार के वेतनभोगी होने का अर्थ था राष्ट्र के प्रति उत्सर्ग के जीवन का अंत। उन दिनों एक हजार रुपये कम नहीं थे। इतनी बड़ी रकम ठुकरा देना उस आदर्शवादी के लिए साधारण बात थी। वे कहा करते थे, ''अपने ही स्वार्थों के लिए तो पशु भी जी लेता है। मनुष्य होकर जो दूसरों के दुःख-दरद का ध्यान न रखे तो वह बिना सींग-पूँछ का जानवर ही तो है।''

इन सब प्रलोभनों में कभी उनका चित्त डाँवाडोल नहीं हुआ। उन्होंने जेल से छूटते ही इतिहासप्रसिद्ध क्रांतिकारी सरदार अजीत सिंह के साथ मिलकर 'पेशवा' उर्दू पत्र निकाला। इस पत्र ने जन-जागरण की बहुत बड़ी कमी पूरी की।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'पेशवा' के माध्यम से इन क्रांतिकारियों की आवाज जन-जन के अंतर में सोई मर्दानगी, आदर्शवादिता तथा राष्ट्र प्रेम जगा रही थी। इन्हीं दिनों लॉर्ड कर्जन ने बंगाल को टुकड़ों में बाँट दिया। इस निर्णय के विरोध में देशव्यापी आंदोलन हुआ। आंदोलन को भड़काने में 'पेशवा' बहुत सहायक सिद्ध हुआ।

एक ओर अँगरेजी हुकूमत थी जिसके पास बहुत बड़ी सेना, धन-दौलत, शासनतंत्र, पुलिस, शस्त्रास्त्र आदि सब साधन थे। दूसरी तरफ कुछ गिने-चुने साधनहीन मनुष्य थे, जिनके साथ सचाई की सेना, आदर्शों की धन-दौलत तथा राष्ट्र यज्ञ में आहुति देने की अदम्य लालसा थी। ऐसे ही गिने-चुने सिरफिरों के अगुआ सूफी जी थे। भारतीय जनता सो रही थी, उसे जगाना था। उसकी इस नींद का लाभ उठाकर ही अँगरेज भारत पर शासन कर रहे थे।

लाहौर के आर्य होटल में एक विराट सभा का आयोजन किया गया। सरकार ने पंजाब के नौ जिलों के लिए एक कानून पास किया था जो जनहित की दृष्टि से अनुचित था। सभा में सरदार अजीत सिंह इस कानून के विरोध में आग उगलने वाली वाणी में भाषण दे रहे थे। सोए सिंह भी यह हुंकार सुनकर जागने लगे थे। इसी समय अँगरेज पुलिस ने होटल को घेर लिया। उपस्थित जनसमुदाय में भय की एक लहर दौड़ आई थी। सूफी जी ने लपककर होटल का दरवाजा बंद कर दिया तथा चट्टान की तरह अड़ गए। अँगरेज आफीसर को उन्होंने इस प्रकार निहत्थी भीड़ पर चढ़ आने के लिए डाँटा। जब तक सभा चली अँगरेज अफसर का साहस न हो सका कि वह कार्रवाई रुकवा देता।

अन्यायी चाहे कितना ही सबल क्यों न हो! वह जरा से प्रतिरोध से भी भय खाने लगता है। अँगरेजी हुकूमत के विरुद्ध सरदार अजीत सिंह तथा सूफी अंबाप्रसाद के दल 'भारत माता' ने जब मोर्चाबंदी शुरू की तो वे बौखला उठे, क्योंकि सच्ची शक्ति उनके पास नहीं थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सचाई तथा न्याय आदि उनके साथ होता तो उन्हें इन थोड़े से देशभक्तों से भय खाने की आवश्यकता नहीं थी। सच पूछा जाए तो अँगरेज इनके मुकाबले में बहुत कमजोर सिद्ध हुए थे।

सूफी जी इस तथ्य से परिचित थे कि साधन तथा प्रभुत्व अपने आप में महान नहीं होता, वरन उसका सदुपयोग करके उसे महत्ता दिलाई जा सकती है। मनुष्य की प्रतिभा तथा योग्यता की यही स्थिति है। सदुपयोग एक अनिवार्य शर्त है। उन्होंने अपनी लेखनी का उपयोग एक महान प्रयोजन के लिए किया। सूफी जी अपने स्वार्थ के लिए ही लिखते तो वे काफी धन कमा सकते थे, अच्छा पद पा सकते थे, पर उन्होंने उन्हें सामने आए हुए ठुकरा दिया। इसी का परिणाम है कि वे आज एक प्रेरक अमर चरित्र के रूप में याद किए जाते हैं।

सूफी जी ने 'पेशवा' के माध्यम से वह हवा बहाई कि उससे चिनगारियाँ दावानल बनने लगीं। जनता जागने लगी। उनके संपादकीय बेजोड़ थे। पेशवा की पुरानी फाइलें देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी लेखनी में कैसा जादू था?

अँगरेज सरकार हाथ धोकर इन लोगों के पीछे पड़ गई। इनको पकड़ने के लिए जाल बिछाए जाने लगे। किसी भी मूल्य पर अँगरेज सरकार इन्हें खुला नहीं छोड़ना चाहती थी। जितना शीघ्र हो सके इन्हें बंदी बनाना चाहती थी। बंदी बनाने के बाद मृत्युदंड या फाँसी की सजा इन्हें दी जाती। ये बंदी होना नहीं चाहते थे। गुप्त वेश में वे नेपाल जा पहुँचे। नेपाल गवर्नर ने इन्हें आश्रय दिया।

एक ही हाथ के होते हुए भी सूफी जी जो लिपियाँ लिखने में समर्थ थे लिख लेते। उन्हें अपने एक हाथ का अभाव कभी खटका नहीं। वे मजाक में कहा करते थे, "१८५७ की लड़ाई में एक हाथ कट गया था सो इस जन्म में एक ही रह गया।"

उनका यह जोश तथा देशप्रेम केवल लेखन तथा भाषण देने तक ही सीमित नहीं रहा वे अब्बल दरजे के संवाददाता तथा गुप्तचर भी थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सन् १९१० की बात है। अंबाला कमिश्नर जनता पर बहुत अत्याचार करता था। ये गूँगे-बहरे बनकर उसके यहाँ नौकर रह गए। उन्हें खाने की मेज पर मक्खियाँ उड़ाने का काम दिया गया। उस समय आया वह कमिश्नर अपने सहायकों से परामर्श करता था। इसकी रिपोर्ट 'अमृत बाजार पत्रिका' के लिए वे भेज देते थे। कई महीने तक वे गूँगे-बहरे बनकर उसकी आँखों में धूल झोंकते रहे। कमिश्नर अपनी इन बातों को पत्रिका में देखकर हैरान होता था। सूफी साहब पर वह कभी शक न कर सका।

भारत में रहना कठिन हो गया तो वे ईरान चले गए। ईरान में इन्होंने 'आबे हयात' पत्र का संपादन किया। वहाँ रहकर भी आप भारतीय आंदोलन में सहायता देते रहे। उनके देशभक्तिपूर्ण लेखों से भारत ही नहीं, ईरान को भी लाभ हुआ। सूफी जी वहाँ लोकप्रिय नेता बन गए। सूफी जी के जीवन से यह सिद्ध हो गया कि सचाई और न्याय, आदर्श तथा लोक-मंगल का क्षेत्र देश की सीमा से बँधा नहीं है। आदर्शों के लिए जीवन अर्पित करने वालों की सर्वत्र अपेक्षा है। जहाँ भी ऐसे सच्चे मानव रहेंगे, वहाँ की जनता को लाभ ही मिलेगा।

ईरान में रहते हुए वे प्रथम विश्वयुद्ध में ईरान के पक्ष में लड़े। इनके प्रति वहाँ के लोगों में बड़ी श्रद्धा थी। वे उन्हें अपना पथप्रदर्शक मानते थे।

सत्य, न्याय और आदर्शों का प्रकाश फैलाने वाले सूफी जी का जीवन लोकमंगल के लिए तिल-तिल करके जलने वाले दीपक की तरह भारत व ईरान तथा समस्त विश्व के लोगों को प्रेरणा-प्रकाश देता रहेगा।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कट देशभक्ति के प्रतीक राव तुलाराम

असफलताएँ जिस प्रकार व्यक्ति के जीवन में आती हैं वैसे ही देश व समाज के जीवन में भी आती हैं और वे सफलता का प्रथम सोपान बनकर अपनी भूमिका निभा जाती हैं। हम जब इनका मूल्य आँकने बैठते हैं तो प्राय: सफलताओं पर ही ध्यान केंद्रित कर बैठते हैं और असफलता के रूप में आई उन घटनाओं का मूल्यांकन करना भूल जाते हैं। सन् १८५७ की क्रांति के बारे में भी हमारे कुछ ऐसे ही विचार हो सकते हैं पर यह सही नहीं है।

सन् १८५७ के संग्राम के सेनानी का मूल्य असहयोग के किसी सेनानी से कम आँकना उनके साथ अन्याय करना ही होगा। युग के संदर्भ में उनकी भूमिकाएँ भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण थीं, जितनी बाद वालों की रहीं। अतीत के गर्भ में दबे उन स्वतंत्रता के दीवानों का व्यक्तित्व व कर्तृत्व हमारे लिए आज भी प्रेरणा का स्रोत बन सकता है। ऐसे ही एक सेनानी की बात हम करने जा रहे हैं–राव तुलाराम की, जिन्होंने हरियाणा में इसका नेतृत्व किया।

राव तुलाराम ९ दिसंबर, १९३५ में रिवाड़ी के राजपरिवार में जन्मे, सुख-सुविधाओं और हास-विलास के साधनों की सुलभता ने अधिकांश व्यक्तियों को स्वकेंद्रित और अकर्मण्य बनाया है। अँगरेज इस तथ्य को अच्छी तरह जानते थे। अत: उन्होंने देशी राजाओं के राज्यों का प्रबंध अपने हाथ में लेकर उन्हें इन्हीं सब पतन के जंजालों में उलझाकर वर्चस्वहीन बना दिया था किंतु उन्हें जब अपनी ये सुख-सुविधाएँ छिनते नजर आईं, तब उन्हें ठोकर लगी। १८५७ की क्रांति के पीछे यह एक बहुत बड़ा कारण था। किंतु राव तुलाराम के सामने ऐसी कोई दिक्कत नहीं थी। वह तो विशुद्ध रूप से देशप्रेम से ही प्रेरित हो इस संग्राम में कूदे थे।

जिस नवयुवक को दैहिक सुखोपभोग के समस्त साधन उपलब्ध हों वह फिर क्रांति और देशप्रेम की बातें कैसे करने लगा, जबकि उसकी तरह अन्यान्य राजकुमार तो इन्हीं में उलझे हुए थे। इस परिवर्तन का श्रेय उनकी आध्यात्मिक दृष्टि को जाता है जो अपने कुलगुरु से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिली थी। स्मरण रहे सन् १८५७ की क्रांति में गुप्त प्रचार का काम समाज के इसी वर्ग ने किया था।

अँगरेज अपना राज्य स्थापित करके ही चुप नहीं रह गए थे। उनका पहला हमला तो भारत की भूमि पर हुआ था और वे अपनी भेदनीति के कारण उसमें सफल भी हो गए। उनका हमला भारतीयों के धर्म और उनकी संस्कृति पर था। यदि वे इसमें सफल हो जाते तो फिर उन्हें यह सोने की चिड़िया छोड़नी न पड़ती। इस दूसरे हमले से भारत का जनमानस आंदोलित हो उठा था। यह कहना कि १८५७ की क्रांति थोड़े से राजाओं का विद्रोह था सरासर गलत होगा। इस क्रांति के जन्म के मूल में धर्म-संस्कृति पर होने वाला आक्रमण ही था। तभी तो सैनिक, साधु, संन्यासी और सामान्य प्रजाजनों ने भी इसे अपनी लड़ाई मानकर इसे जारी रखा था। अँगरेज इतिहासकारों ने इसे विप्लव की संज्ञा देकर सत्य पर परदा डालने का प्रयास किया है। वस्तुतः यह आंशिक रूप से राजनीतिक और आंशिक रूप से धर्मयुद्ध था।

राव तुलाराम कुशल प्रशासक व योग्य सेनानी थे। इस तथ्य को उनके बड़े भाई कृष्ण गोपाल राव भली प्रकार जानते थे। बड़े भाई ने इस युद्ध में रिवाड़ी का मोर्चा अपने छोटे भाई को सँभलवाया और स्वयं मेरठ की कमान सँभालने जा पहुँचे। राव तुलाराम ने रिवाड़ी का प्रबंध हाथ में आते ही भारत माँ की बेड़ियाँ तोड़ फेंकने के कार्य में जी जान से जुट पड़ने का निश्चय कर लिया।

रिवाड़ी एक छोटी सी रियासत थी। एक रियासत के छोटे से अधिपति की क्या हिम्मत थी कि वह एक ऐसे साम्राज्य को चुनौती दे जिसमें कभी सूर्य अस्त ही नहीं होता। किंतु यहाँ स्मरणीय तथ्य यह है कि इस बार देशी राजाओं ने संगठन की शक्ति को समझा था साथ ही देश धर्म को अपनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं से ऊपर स्थान दिया था। राव तुलाराम की शक्ति भी ये उदात्त भावनाएँ ही थीं।

क्रांति की बारूद में आग समय के पहले पड़ जाने पर भी अँगरेजों को छठी का दूध याद आ गया था। क्रांति का बिगुल बजते ही राव तुलाराम ने गुड़गाँव में कर्नल फोर्ड की अँगरेज सेना की ओर रुख किया। कर्नल फोर्ड व उसके सैनिक इन देशभक्तों के आगे ठहर न सके। इस लड़ाई में उन्हें रसद व गोला-बारूद की प्राप्ति भी हुई। अब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो उन्होंने रिवाड़ी के निकट की अँगरेजी छावनी का भी सफाया कर उस पर अधिकार कर लिया।

गोकुलगढ़ में तोपें डालने व टकसाल आरंभ करके उन्होंने दिल्ली और आसपास के देशभक्त क्रांतिकारियों की धन व शस्त्रास्त्र से सहायता की। १६ नवंबर को नसीबपुर में इनका मुकाबला कर्नल जोरार्ड से हुआ। अँगरेज सेना के पास तोपें, गोला-बारूद व सैनिक संख्या अधिक होने के बावजूद भी वे इन अल्पप्रशिक्षित देशभक्तों के सामने नहीं ठहर सके। कर्नल जोरार्ड व उसके बहुत से सैनिक राव तुलाराम व उनके साथियों के द्वारा मारे गए। किंतु दूसरे ही दिन पंजाब व राजस्थान के देशी राज्यों की सेनाएँ अँगरेजों की मदद के लिए जा पहुँची। उनसे हुए संग्राम में वे बुरी तरह घायल हुए। उनके साथियों ने उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया।

इस पराजय से राव तुलाराम निराश नहीं हुए। देशव्यापी क्रांति में एक स्थान पर हुई पराजय का उनके लिए कोई अर्थ नहीं था और फिर वे इस संग्राम में कूदे थे तो सब आगा-पीछा सोचकर ही कूदे थे। देश और धर्म के लिए मरे तो स्वर्ग और जीवित रहे तो विजयश्री का वरण-इस भावना ने उन्हें निराश होने का अवसर ही नहीं दिया।

उन्होंने अपनी बची-खुची शक्ति को एकत्रित किया और हजार कष्ट कठिनाइयों को सहते हुए भी आजादी की लड़ाई को जारी रखने के लिए कालपी के निकट तात्या टोपे से जा मिले।

इस समय क्रांति के स्तंभ एक-एक करके टूटते जा रहे थे। नाना साहब और तात्या टोपे भी इस स्थिति में नहीं थे कि इसको सफल बना सकें। समय के पूर्व भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न स्थानों पर क्रांति फूटने के कारण उसमें वह शक्ति नहीं रही जो एकाएक विस्फोट में हो सकती थी। फिर भी राव तुलाराम निराश नहीं हुए। भारत की भावी स्वतंत्र सरकारों से सहायता लेने के लिए भारत से बाहर निकले। वहाँ पुनः शक्ति संगठित करने का प्रयास किया। बचकर भारत से भाग निकलने वाले क्रांतिकारियों को उन्होंने संगठित भी किया पर वे उनसे कुछ काम ले पाते उसके पूर्व उनका देहांत हो गया। उनकी यह भावना भारत की पीढ़ी को व्यक्तिगत सुखों से ऊपर उठकर राष्ट्र के जीवन-मरण के प्रश्नों को सुलझाने की प्रेरणा देती रहेगी।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राष्ट्ररक्षा को समर्पित
मेजर मेघसिंह

''मेजर मेघसिंह मैं तुम्हें एक बहुत ही खतरनाक मोर्चे पर भेजना चाहता हूँ, बोलो तैयार हो।'' कमांडिंग आफीसर ने अपने एक मेजर से पूछा।

''इसमें पूछने की क्या बात है सर! आप तो आदेश दें। मुझे देश की रक्षा के लिए इस खतरनाक मुहिम के लिए भेजने योग्य समझा, यह तो मेरा सौभाग्य है।''

''तो सुनो, कोटलाबंदी से गोपालपुर जाने वाली सड़क पर एक पुल है। यदि उसे तोड़ दिया जाए तो दुश्मन काफी कमजोर और असहाय हो जाएगा लेकिन वहाँ पाकिस्तानी फौज का सख्त पहरा है। उनका हवाई अड्डा भी पास में ही है। वह काम बड़ी चतुराई और सावधानी का है। तुम्हीं मुझे इस कार्य के लिए उपयुक्त आदमी लगे हो।''

''अवश्य! यदि ईश्वर ने चाहा तो आज रात ही आप सुनेंगे कि यह पुल उड़ा दिया गया है।''

''इसके लिए तुम्हें कितने सैनिक चाहिए?''

''सिर्फ चार सैनिक!''

''ठीक है तैयारी करो मैं आर्डर देता हूँ।''

यह घटना सितंबर १९६५ की है। उन दिनों पाकिस्तानी सेना उड़ीपूँछ क्षेत्र में जमी हुई थी। उसे हटाना बहुत आवश्यक था। इस कार्य के लिए पहला कदम था, उस पुल को उखाड़ना जो शत्रु के लिए सहायता का मार्ग बना हुआ था।

मेजर मेघसिंह साँझ के समय चार सैनिकों के साथ अपनी चौकी से रवाना हुए। रास्ते में पाकिस्तानी सेना की सात चौकियाँ पड़ती थीं। इन चौकियों पर दुश्मन के सैनिक आधुनिक हथियार ताने बैठे थे। बड़ी ही सूझबूझ और जोखिम का काम था यह, तभी तो कमांडिंग आफीसर ने उन जैसे अनुभवी व्यक्ति को इस कार्य के लिए चुना था। जरा से चूके कि गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कितने ही मील चलने और शत्रु की आँखों में धूल झोंकने के बाद वे पुल पर पहुँचे। बड़ी ही चतुराई से उस पर गश्त लगाते सैनिकों को कानोंकान खबर नहीं होने देकर उन्होंने सुरंगों के सहारे गोले बिछा दिए। आधी रात से कुछ देर बाद ही पलीता लगा दिया गया। भयंकर विस्फोट के साथ ही पुल टूट गया। पाकिस्तानी सेना को जब इस विस्फोट का पता चला, तब तक वे उनकी पकड़ से बाहर हो चुके थे।

सन् १९६५ के भारत-पाक युद्ध में हमारे वीर सैनिकों ने जिस बहादुरी और देशभक्ति का परिचय दिया, वह हमारे लिए गौरव की बात है। कैसे उन लोगों ने जान जोखिम में डालकर अपने से दस गुने विदेशी सैनिकों से लोहा लिया और उन्हें पराजित किया, उनकी यह शौर्य गाथा हम भारतवासियों के लिए जहाँ गर्व की बात है, वहीं हमें अपने राष्ट्रीय दायित्व के प्रति सजग भी बनाती है। राष्ट्र के इन प्रकट घातियों से तो हमारी सेना भी लड़ सकती है, पर प्रच्छन्न रूप से जो देश को हानि पहुँचा रहे हैं उनसे तो हमें ही प्रतिकार लेना होगा।

मेजर मेघसिंह ने उड़ीपूँछ क्षेत्र से पाकिस्तानी सेना का सफाया करने में जिस वीरता और दिलेरी का परिचय दिया है, उसकी कहानी रोंगटे खड़े कर देने वाली है। छह सितंबर को उन्हें नेजापीर चौकी पर अधिकार करने का आदेश मिला। वे अपने साथ साठ सैनिक लेकर बड़े सवेरे चल पड़े। पाँच बजते-बजते वे नेजापीर चौकी पर जा पहुँचे। उनसे तीन गुने सैनिक थे। उनकी राइफलें व मशीनगनें गरज उठीं, पर भारतीय जवानों से उनका क्या मुकाबला था? और फिर मेघसिंह जैसे मेजर के नेतृत्व में लड़ना हो तो फिर कहना ही क्या? वे भूखे शेरों की तरह दुश्मन पर टूट पड़े। कुछ ही मिनटों में चौकी पर तिरंगा फहरा दिया। वायरलेस पर सूचना भेज दी गई–"नेजापीर की चौकी हमारे कब्जे में है। दुश्मन के दो सैनिक मारे गए, पंद्रह घायल हुए हैं, दो बंदी बनाए गए और शेष भाग गए हैं। आज्ञा हो तो यहाँ से दो मील दूर की चौकी अरीढोक पर भी तिरंगा फहरा दें।"

आज्ञा मिल गई। अरीढोक पर तो पाकिस्तानी सैनिक मुकाबला ही नहीं कर पाए। तीन सौ गज दूर से किए गए रॉकेट के हमले की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भयंकरता देखकर वे भाग खड़े हुए। भारतीय सैनिकों को चौकी खाली मिली।

तीसरे दिन, नौ सितंबर को मेजर मेघसिंह को हाजीपीर दर्रे के पास बने दुश्मन के बेस को उड़ाने का काम सौंपा गया जो उसी दिन पूरा हो गया। यहाँ भी उन्होंने अपने साथ गिने-चुने सैनिक ही रखे थे। उसके बाद उन्होंने कमांडिंग आफीसर को बेतार संदेश भेजा–''यदि आप हमें ढाई घंटे का समय दें तो हम उड़ी को पूँछ से मिला दें।''

''परंतु····· उधर से आवाज आई।

''आप इसकी चिंता न करें सर! दुश्मन के सैनिकों की संख्या बहुत है पर हौसले पस्त हैं। अभी वे भेड़ों की तरह भाग खड़े होंगे। बस आपके आदेश मिलने की देर है।''

''ठीक है, इजाजत है।''

मेजर मेघसिंह और उनके थोड़े से जाँबाज सैनिकों ने कछूता नाले को पार किया ही था कि दुश्मन की ओर से गोलाबारी आरंभ हो गई। साढ़े चार घंटे तक लड़ाई जारी रही। स्वयं और अपने सैनिकों को बचाए रखकर मेजर मेघसिंह ने दुश्मन के १५० सैनिक धराशायी करके चौकी हस्तगत कर ली। यह उनकी वीरता और युद्ध-कौशल का अनूठा उदाहरण है।

अपने थोड़े से सैनिकों को कछूता नाले के पुल की रक्षा के लिए छोड़कर वे हाजीपीर और उड़ी को मिलाने के लिए चल पड़े। आधा घंटे की गोलाबारी में ही उन्होंने दुश्मन को मैदान छोड़कर भागने को विवश कर दिया। हाजीपीर और उड़ी को मिलाने का यह महत्त्वपूर्ण कार्य मेजर मेघसिंह ने जिस वीरता से किया, उसके चर्चे सुनकर आज भी हमारे जवानों की भुजाएँ फड़कने लगती हैं।

उड़ीपूँछ और हाजीपीर को मिलाने की इस अद्‌भुत सफलता ने कमांडिंग अफसर को बहुत प्रभावित किया। उसने उन्हें अपनी टुकड़ी के साथ छंब क्षेत्र में भेज दिया।

१९ सितंबर को उन्हें दुश्मन के एक बेस को समाप्त करने के लिए भेजा गया। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए वे अपने साथ पैंतीस जवान ले गए। रात्रि के अंधकार में जब उनकी कड़कती हुई भेद भरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवाज गूँजी, आदेश इस ढंग का था कि दो कंपनियाँ उनके साथ हैं। पाकिस्तानी सैनिकों ने समझा कि पूरी दो कंपनियाँ उन पर चढ़ बैठी हैं तो वे पहले ही भयभीत हो गए और जब छत्तीस राइफलें एक साथ गरजीं तो उनका संदेह और भी पक्का हो गया। अब किसकी हिम्मत थी जो चौकी पर ठहरता। सब भाग खड़े हुए। और तो ठीक वे अपने शस्त्रागार को भी नष्ट नहीं कर सके। कई सैनिक पकड़े भी गए। एक ने शस्त्रागार का पता भी बता दिया।

छंब के बाद उन्हें अखनूर भेज दिया गया। वहाँ उन्हें दुश्मन के एक बड़े शस्त्रागार पर अधिकार करने का काम सौंपा गया। अधिकार न किया जा सके तो उसे नष्ट करना तो था ही। वे इसके लिए अपने साथ पचास सैनिक ले गए थे जबकि पाकिस्तानी सैनिकों की संख्या उनके जवानों से छह गुनी थी। वे संख्या में पूरे तीन सौ थे। भारतीय सैनिकों को उनकी तोपों का मुकाबला अपने ग्रेनेड व राइफलों से करना पड़ा।

मेघसिंह सच्चे सेनानायक थे। वे सदा आगे रहते थे। खतरे के लिए पहले वे आगे आते थे फिर कहीं अपने सैनिकों तक आने देते थे। इसी कारण उनके सैनिक उन्हें बहुत चाहते थे। अखनूर के इस संघर्ष में भी वे सबके आगे थे। एकाएक एक गोली उनके दाहिने कंधे को चीर गई। वे सँभलते तब तक दूसरी गोली आई और जाँघ में लग गई। वे गिर पड़े पर गिरे हुए भी आदेश देते रहे–'आगे बढ़ो।'

अपने नायक को यों धराशायी होते देख सैनिक की आँखों में रक्त उतर आया। वे अपने प्रिय नायक को घायल करने का बदला लेने के लिए दुगने जोश से लड़ने लगे। पाकिस्तानी सैनिकों ने सामने आती हुई मौत की इस बाढ़ को देखा तो जो कच्चे थे वे तो भाग खड़े हुए। जो डटे रहे वे उन वीरों की गोलियों के निशाने बनने लगे। अब दूसरों का डटा रहना कठिन था। उनके पाँव उखड़ गए।

मेजर मेघसिंह को आहत अवस्था में उपचारार्थ सैनिक चिकित्सालय में लाया गया। उनकी इस वीरता के उपलक्ष्य में उसी चिकित्सालय में ही उन्हें वीर चक्र से सम्मानित किया गया।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राष्ट्रीय स्वाभिमान के रक्षक बालाजी विश्वनाथ

पश्चिमी घाट के जंजीराबाद नामक प्रदेश का अधिपति कासिम अपनी बहुसंख्यक पर असंगठित हिंदू प्रजा पर मनमाने अत्याचार किया करता था। उसकी इस क्रूरता का प्रेरक दिल्लीपति औरंगजेब था। कासिम छत्रपति शिवाजी के समय से ही हिंदुओं की अन्याय के विरुद्ध उठती हुई शक्ति को कुचलने का कुप्रयास करता रहता था।

महाराष्ट्र में उन दिनों जागरण की लहर उठ रही थी। कान्होजी आंग्रे नामक एक महाराष्ट्रियन योद्धा ने थोड़े से नवयुवकों की सेना गठित कर तट प्रदेश पर अधिकार कर लिया। उसके अपने युद्धपोतों और जाँबाज साथियों के कारण कासिम की नींद हराम हो गई थी। कान्होजी आंग्रे की शक्ति दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी। वह कासिम के अपनी हिंदू प्रजा पर अत्याचार करने के मार्ग में बाधा बनता जा रहा था।

कासिम और कान्होजी आंग्रे के बीच चलने वाले संघर्ष में चिपलून जिले के मीठ बंदर नामक स्थान के नमक व्यापार के ठेकेदार और जिले के कर उगाहने के ठेकेदार युवक बालाजी ने अपने स्वधर्मी और देश के हित में संघर्ष करने वाले कान्होजी आंग्रे का पक्ष लिया। कासिम को जब यह ज्ञात हुआ तो वह बहुत कुपित हुआ। उसने बालाजी के भाई जनार्दन को हाथ-पाँव बाँधकर संदूक में बंद करके जीवित सागर में बहा दिया।

ऐसी स्थिति में बालाजी का उस क्षेत्र में रहना संभव नहीं था। अतः वह सपरिवार वहाँ से भाग चले। यही व्यक्ति जो एक दिन कासिम के भय से अपनी प्राणप्रिय जन्मभूमि को छोड़ने को विवश हुआ था, आगे चलकर अपनी कार्यकुशलता, योग्यता, सूझबूझ तथा राष्ट्रनिष्ठा के कारण महाराष्ट्र का यशस्वी पेशवा बना और उसने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी जन्मभूमि छोड़ते समय कासिम के अत्याचार से अपने क्षेत्र जनों को मुक्ति दिलाने की जो प्रतिज्ञा की थी उसे पूरी करने में सफल हुआ।

बाला जी का घराना जंजीराबाद के सिद्धि सरदार की अधीनता में अपने ग्राम श्री वर्द्धन पट्ट के परगने की मालगुजारी वसूल करने का काम किया करता था। बालाजी के पिता विश्वनाथ भट्ट का इस तहसीलदारी के कारण क्षेत्र में अच्छा नाम था। पिता की मृत्यु के पश्चात बालाजी के ज्येष्ठ भ्राता जनार्दन भट्ट इस कार्य को करते थे। महत्त्वाकांक्षी बालाजी ने भाई के आश्रय में रहकर पैतृक व्यवसाय में हाथ बँटाने की अपेक्षा अपना स्वतंत्र व्यवसाय व आधिपत्य जमाने के लिए चिपलूक जिले में प्रवचन किया। वे सपरिवार वहीं रहते थे तभी आंग्रे का पक्ष लेने के कारण उन्हें वहाँ से भागना पड़ा।

मीठ बंदर से चलकर वे बलयास ग्राम पहुँचे। वहाँ उनके मित्र महादेव भानु रहते थे। वह भी अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए बाहर जाना चाहते थे सो दोनों परिवार सतारा की ओर चल पड़े। किंतु वे अधिक दूर नहीं जा पाए थे कि कासिम के सैनिकों ने उन्हें पकड़कर अंजन वेल नामक दुर्ग में बंद कर दिया। यहाँ पच्चीस दिन बड़े कष्ट में बिताने पर भी बालाजी और महादेव भानु निराश नहीं हुए। आशा ही परम बल के सहारे उन्होंने दुर्गपति को अपने पक्ष में कर लिया और मुक्त हुए। मुक्ति के पश्चात वे कैसे सासबाड़ पहुँचे और आवाजी पुरंदरे की सहायता से महाराष्ट्र की राजधानी सतारा में महाराष्ट्र छत्रपति के सचिवालय के अधीन मालगुजारी वसूल करने वाले प्रमुख अधिकारी बने, यह लंबी कहानी है। जब वे मीठ बंदर से भागे थे तब उनके साथ उनका चारवर्षीय पुत्र बाजीराव भी था जो आगे चलकर उनका उत्तराधिकारी पेशवा बना।

बालाजी जब महाराष्ट्र की राजधानी में राज्य के मालगुजारी वसूल करने वाले अधिकारी बने, उन दिनों छत्रपति सिंहासन के लिए छत्रपति संभाजी के पुत्र शाहू और छत्रपति राजाराम के पुत्र शिवाजी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं का द्वंद्व हो रहा था। छत्रपति राजाराम की पत्नी महारानी ताराबाई अपने पुत्र को छत्रपति बनाना चाहती थीं। किंतु प्रधान सेनापति और अधिकांश सरदार और न्याय, समस्त पक्ष शाहू की ओर झुके होने के कारण शाहू छत्रपति बनाए गए। शाहू का छत्रपति बनना उचित भी था। उनकी माता येसुबाई अब तक उन्हीं के कारण मुगल सम्राट के यहाँ नजरबंद थी। स्वयं शाहू भी सोलह वर्ष तक नजरबंद रहने के बाद मुक्त होकर महाराष्ट्र आए थे।

बालाजी इस ओर से उदासीन रहकर अपने कार्य कर रहे थे। यद्यपि थे छोटे पद पर किंतु उनकी बुद्धिमत्ता आगे चलकर रंग लाएगी, इसकी उन्हें भी आशा थी और छत्रपति भी उनमें छिपे व्यक्तित्व को समझ रहे थे।

बालाजी का कार्य यों तो मालगुजारी वसूलने का था, पर वे इस तक ही सीमित नहीं रहे। उनकी दृष्टि मात्र अधिकारी या कर्मचारी की ही न होकर उससे भी अधिक महत्त्व की थी। वे राष्ट्र की समृद्धि के लिए कृषकों की समृद्धि को अनिवार्य मानते थे। देश में उत्पादन बढ़ेगा तो खुशहाली अपने आप आएगी–यह सोचकर उन्होंने खेती की उन्नति की ओर विशेष ध्यान दिया। कृषकों को समुचित प्रोत्साहन व मार्गदर्शन देकर उन्होंने देश की समृद्धि को बढ़ाया। किसान उन्हें देवता की तरह मानने लगे। अब पहले की तरह मालगुजारी वसूलने के लिए सैनिकों व ज्यादा कर्मचारियों की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। कृषक अपने आप मालगुजारी कार्यालय में जमा करा जाते थे। किसी किसान को मालगुजारी न देने के कारण दंडित करने का अवसर ही नहीं आता था।

इससे मालगुजारी की दर तो वही रही, पर वसूली के लिए अधिक मनुष्यों को न लगाने के कारण उस राशि में प्रबंध व्यय रूपी कटौती बहुत कम हुई। इससे प्रधान सेनापति धनानंद जाधव और छत्रपति शाहू बहुत प्रभावित हुए। धनानंद जाधव की मृत्यु पर संपूर्ण राजस्व विभाग उन्हें सौंप दिया गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बालाजी ने अपना प्रबंध कौशल व योग्यता तो राष्ट्रहित में दिखाई थी और इसी कारण उन्हें राजस्व विभाग का सर्वेसर्वा बना दिया गया था। पर इसके कारण नवनिर्वाचित प्रधान सेनापति चंद्रसेन उनसे जलने लगा। आगे चलकर उसने उन्हें मारने का षड्यंत्र भी रचा और छत्रपति से द्रोह भी किया। पर दूसरों के लिए कुआँ खोदने वाले को स्वयं उसमें गिरना पड़ता है। उसी उक्ति के अनुसार चंद्रसेन को अपना प्रधान सेनापति पद खोना पड़ा और बालाजी को प्रधान सेनापति पद मिल गया।

बालाजी वीर और योग्य व्यक्ति थे। इनसे भी ऊपर उनकी विशेषता यह थी कि वे हिंदू महाराष्ट्र को प्राणों से भी प्रिय मानते थे। वे जब प्रधान सेनापति बनाए गए उस समय महाराष्ट्र के सामंतगण राष्ट्र का हित न सोचकर व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं में उलझने लगे थे। उन्हें पुनः एकसूत्र में बाँधने वाले कुशल राजनीतिज्ञ और वीर सेनापति की भूमिका उन्होंने बखूबी निभाई।

कान्होजी आंग्रे और कोल्हापुर के राजा को हराकर छत्रपति शाहू के पक्ष में करना और पेशवा भैरव पंत पिंगले को उनकी कैद से मुक्त कराने का वीरता और चतुराईपूर्ण कार्य करके उन्होंने अपनी योग्यता प्रदर्शित की। उसका परिणाम यह हुआ कि वे पेशवा बना दिए गए। कभी सिद्धियों के डर से मारे-मारे फिरने वाले बालाजी जो आरंभ में पेशवा के कार्यालय में मामूली क्लर्क की हैसियत से काम करते थे अपनी राष्ट्र निष्ठा और योग्यता के बल पर महाराष्ट्र के पेशवा पद पर अभिसिक्त हुए।

कान्होजी आंग्रे को सैनिक सहायता देकर उन्होंने अपनी जन्मभूमि को सिद्धियों के आधिपत्य से मुक्त कराने की अपनी प्रतिज्ञा को भी पूर्ण कर लिया।

पेशवा पदप्राप्ति में उनकी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा का उतना हाथ नहीं था जितना उनकी योग्यता और उत्कट राष्ट्रीय तथा जातीय भावना का। पेशवा बनने के बाद भी वे सुखोपभोग में नहीं डूब गए। प्रायः

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसा होता है कि सामान्य स्थिति का व्यक्ति जब किसी उच्च पद पर पहुँच जाता है तो उसमें गर्व आ जाता है और वह कर्मनिष्ठ न रहकर विलासी बन जाता है किंतु बालाजी ने ऐसी मूर्खता नहीं की।

उच्च पद पर रहते हुए भी वे स्वभाव, व्यवहार व हृदय से छोटे लोगों के प्रति हमदर्द ही बने रहे थे। वे दिल्ली के मुगल शहंशाह फरुखशियर की प्रार्थना पर उसके साथ संधि कर उसे रक्षा का वचन देने के लिए ससैन्य दिल्ली जा रहे थे, तब की बात है। उन्होंने अपने सेनाधिकारियों को आदेश दे रखे थे कि मार्ग में पड़ने वाले खेतों में से अन्न या घास का एक तिनका भी अपनी सैन्य द्वारा क्षतिग्रस्त नहीं होना चाहिए। किंतु उनके एक अभिमानी सरदार मल्हार राव होलकर ने उनकी यह आज्ञा नहीं मानी व अपने घोड़ों के लिए एक किसान की खड़ी फसल कटवा डाली, साथ ही उसे मारा-पीटा भी।

इस बात की सूचना जब बालाजी को लगी तो वे बड़े कुपित हुए इसलिए नहीं कि उनकी आज्ञा का उल्लंघन किया गया है, वरन इसलिए कि गरीब आदमी का अहित किया गया है। अत: उन्होंने मल्हार राव की सारी संपत्ति जब्त करके किसान को उसकी फसल और मार-पीट का पूरा हरजाना दे देने का निर्णय दे दिया। कृषक उनकी इस न्यायप्रियता पर बड़ा प्रसन्न हुआ। मल्हार राव की बुद्धि भी ठिकाने आ गई। उसने भविष्य में ऐसा न करने की शपथ खाते हुए उनसे क्षमा माँगी। पेशवा बालाजी विश्वनाथ ने उसे क्षमा तो कर दिया, पर दंडस्वरूप उसका पद घटा दिया। उनके इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर ने उन्हें सामान्य व्यक्ति से ऊपर उठाकर पेशवा पद पर इसलिए जा बिठाया कि वे उसके उपयुक्त थे। उनसे गरीबों व दुर्बलों का रक्षण ही संभव था उन पर अत्याचार नहीं।

मुगल सम्राट फरुखशियर के बेटे मुहम्मदशाह से हुई संधि के अनुसार बालाजी ने चतुरतापूर्वक न केवल मुगल साम्राज्य से अपने प्रदेश ही छीन लिए, वरन मुगल सम्राट का वीरतापूर्वक मुकाबला भी किया।

❐

मुद्रक-युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org